

jftLV^h laö Mhö ,yö&33004@99
33004/99

REGD. NO. D. L.-

vlk/kj.k
EXTRAORDINARY
Hkx III—[k.M 4
PART III—Section 4
izkf/dkj ls izdkf'kr

PUBLISHED BY AUTHORITY

ubZ fnYyh] cq/okj] ekpZ 29] 2017@pS=k

la- 119]
8] 1939
No. 119]
8, 1939

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 29, 2017/CHAITRA

तिमलनाडु के उच्च विद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम, 2009 के अंतर्गत स्थापित)

अधिसूचना

तिरुवारूर, 29 मार्च, 2017

सं. के. वि. त. ना.-10(1)/2012 विधक.— निम्नलिखित को सर्वसाधारण कड जानकारी के लिए

उपस्थित किया जाता है :—

प्रथम अध्यादेश

प्रशासनिक अध्यादेश	
अध्यादेश क्र.	शीर्षक
3	सामान्य भित्त निधि और पंशुन
शैक्षिक और परीक्षा संबंधी अध्यादेश	
1	अभ्ययन विभाग और उनके वर्तमान कार्य
2	विद्यालय मंडल विद्यार्थी का प्रवेश
3	विद्यालय के विद्यार्थी द्वारा देय शर्त
4	बी.एससी., बी.एस., बी.ए., एम.ए., एम.एससी. उपाधि अभ्ययन कार्यक्रम और
5	एम.एफ.ए. उपाधि अभ्ययन कार्यक्रम
6	पी.एच.डी. अभ्ययन कार्यक्रम
7	दीक्षांत समारोह
8	विद्यालय द्वारा उच्च विद्यालय/उपाधि/संस्थान के साथ
9	विद्यार्थी के बीच अनशासन का निवारण

1749 GI/2017

(1)

प्रशासनिक अध्यादेश

अध्यादेश : 3

[कार्य पद द्वारा 28/05/2011 को संपूर्ण अपनी चौथी बैठक में अनुमोदित]

सामाज्य भिवृय िनिध और पशुशन

[अधिनयम 28[0] के अंतगभूत]

िवं विवलय के सभी शैिीक और िशैीकेतर कमभूचारी, िजहने ढद. 1 जनवरी, 2004 के बाद कशं सरकार/िवं विव

ालय मश कायभूभार ऽहण ढकया है, िवृ मंालय (भा.स.) ऽद्वारा जारी अधिसूचना सं.

5/7/2003-ईसीबी एवं पीआर, ढद. 05/07/2003 के ंवधान के अनुसार नवीन पशुशन िनयम

द्वारा और अधिसूचना संया एफ. सं. 1(7)(2)/2003/टीए/67-74, ढद. 04/02/2004 मश क\$ गई

उनक\$ ायानुसार और बाद मश समय-समय पर ढकए गए संशोधन के अनुसार शासित हगे।

शैिीक और परीीा संबंधी अयादेश

अयादेश : 1

[िवं पदरषद द्वारा ढद. 03/04/2010 को संपु िद्वतीय बैठक मश और

कायभू पदरषद द्वारा

ढद. 08/05/2010 को संपु िद्वतीय

बैठक मश अनुमोढदत]

अययन िवभाग और उनके वतभूमान कायभू

[तिमलनाडु केउीय िवं विवलय अधिनयम, 2009 के पदरिनयम 15(5) (ए)

मश

ायायित धारा 26(के) के अंतगभूत]

1.

समाज िवृान एवं मानिवक\$ िवंपीठ के अंतगभूत िनांढकत िवभाग को

सिमिलत ढकया गया है : (i) तिमल िवभाग

(ii) अंज्जी िवभाग

(iii) ंादेशिक अययन िवभाग

2. मूलभूत एवं अनुयु िवृान िवंपीठ अंतगभूत िनांढकत िवभाग को

सिमिलत ढकया गया है : (i)

भौतिक िवृान िवभाग (ii) रसायन िवभाग

3. गिणत एवं कम्प्यूटर विज्ञान विभागीय के अंतर्गत निम्नलिखित विभाग को

समिलित ठक्या गया है : (i) गिणत विभाग

अज्ञात : 2

[विभागीय पद 1/2/2010 को संपूर्ण 1/2/2010 तीसरी बैठक मं और कायदा पद

1/2/2010

8. 08/05/2010 को संपूर्ण 1/2/2010 तीसरी बैठक मं अनुमोदित]

विभागीय विभाग मं विभागीय का वेश

(अधिनियम क 6(1)(xviii), 6(2)(i) & (ii), 7 एवं 28(1)(ए) के अंतर्गत)

1. कोई भी अथवा विभागीय विभाग मं अज्ञात के ठकसी भी कायदा मं वेश के लिए तब तक पात्र नहल होगा, जब तक ठक वह संबंधित कायदा मं वेश के लिए पात्र क 1 शतक के रूप मं विभागीय विभाग 1/2/2010 निम्नलिखित परीक्षा उद्घोषित नहल कर लेता/लेती है।

1/2/2010 1/2/2010 4°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

3

2. विभागीय विभाग वद विभिन्न अज्ञात कायदा मं वेश के लिए आवेदन पत्र विभागीय पद/या ठकसी अथवा संस्था 1/2/2010 समय-समय पर निम्नलिखित ठकए गए के अनुसार होगा। सहयोगी संस्थान के संबंध मं जिनके साथ विभागीय ने एक औपचारिक समझौता ापन ठक्या है या वह संस्थान, जिन्हें अधिनियम के आवधान के अनुसार मायता 1/2/2010 है, आवेदन पत्र उपयुक्त रूप से संशोधित ठक्या जाएगा।

3. विभागीय विभाग के विभिन्न कायदा मं दाखिले क अंतिम तिथि 1/2/2010 वष 1/2/2010 पद 1/2/2010 तय क जाएगी।

4. विभागीय विभाग के विभिन्न अज्ञात कायदा मं वेश लेने वाले अथवा वष क संस्था 1/2/2010 वष 1/2/2010 निम्नलिखित क जाएगी।

5. एतक, एतकोर, एम.ठफल, डिडलोमा, पीजी डिडलोमा अज्ञात कायदा मं वेश के लिए वेश संबंधित विभागीय या विभाग/क 1/2/2010 गठित वेश समित 1/2/2010 ठक्या जाएगा। वेश समित मं

संकायान्तरित विभागान्तरित के निदेशक और संबंधित विभाग के दो वरुसदय हगे। हालांकि, जब आवश्यक हो, कुलपित एक उपयुक्त वेश समित का गठन कर सकते ह। इसक रचना और कायदावाही वैसी ही होगी जैसा कि कुलपित द्वारा तय ठकया गया है।

6. डॉक्टर ऑफ फलॉसफी जैसे अनी अयन कायदा म वेश पर संबंधित विवापीठ के विवापीठ मंडल द्वारा
गए उठेय के विश्बयान क जांच करेगा।

विचार 8

7. सहयोगी संथा के मामले म, संथान क वेश समित के अलावा, कुलपित का नामांकित
वि वेश समित का सदय
होगा।

8. पाता क आवश्यकता को पूरा करने वाले ऐसे अ यथय को शैक्षणिक अभिलेख के आधार पर और/या ययेक अयन कायदा के संबंध म जैसा निधांतर ठकया गया है, ठकसी भी वेश परीक्षा/मौखिक म अ यथ के दशान पर विचार ठकया जा सकता है। विभ अयन कायदा म अ यथय को योयता-म के आधार पर भत कराया जाएगा। कोई भी अ यथ वेश को अपना अधिकार मान कर दावा नह करेगा।

9. केवल ऐसे अ यथ, जिह ठकसी भी कानून द्वारा सिमित वतमान म मौजूद भारतीय वि विवालय क परीक्षा उणीक क है, या ऐसी अय परीक्षा जिसे समक मायता ञा है, वेश के लिए पा हगे। विदेशी डिप्री/पाक क तुयता वि विवालय द्वारा उस विभाग के साथ परामश से निधांतर ठकया जाएगा, जिसम विवाथ वेश क मांग कर रहा है।

10. पिछड़े राय और विदेशी देश के अ यथय के लिए भारत सरकार द्वारा आरित उतम सीट म वेश के संबंध म, उनके वेश को भारत सरकार के दशािनदश द्वारा शासित ठकया जाएगा। हालांकि, ऐसी उतम सीट क कुल संया वेश के उस वष म वि विवालय के कुल अंतर्गण के 5% से अधिक नह होनी चाहिए।

11. ँवेश संबंधी ँवधान म कुछ भी शामिल होने के बावजूद, िजन अययन कायभ्रम म विविवालय का सहयोगी संथान के साथ समझौता ापन है, उन अययन कायभ्रम म ँवेश के लिए भी, विविवालय मिहला, ढद ांग है। ऐसे विशेष ँवधान को समय-समय पर िनयम के अनुसार िनधाभ्ररत ढकया जाएगा।
12. कोई भी अ यथट आम तौर पर एक समय म एक से अधिक अययन कायभ्रम म भत नह होगा। हालांढक, विविवालय ढरारा अडय संथान म पेशेवर ँकृति के अंशकालिक/सायंकालीन ँमाणपुडिलोमा अययन कायभ्रम करने के लिए संबंधित विवापीठ के संकायायु/कथ के िनदेशक से परामशभ्र के पु ात अनुमित दी जा सकती है। ऐसे अययन से विविवालय म विवाथ क शैणिक गितिविधय म बाधक नह होना चाहिए। यढद विविवालय म छा के शैणिक गितिविधय म इसे बाधक पाया जाए तो विविवालय ढरारा अनुमित वापस ले ली जा सकती है।
13. ँवेश के समय सभी अ यथट एक अधिकृत मेडिकल ँैिणेशनर/सहायक िसिवल सजभ्रन से एक मेडिकल ढफटनेस ँमाणपु ँंतुत करथगे।
14. अ यथट को एक विवापीठ म एक अययन कायभ्रम म विविवालय के छा के ढप म ँवेश पर िनधाभ्ररत शुडक का भुगतान करने के बाद भत ढकया जाएगा। ँव-सहायता और ँवय-विदुपोषित अययन कायभ्रम के लिए, विविवालय ढरारा शुडक का िनधाभ्ररण उस अययन कायभ्रम को चलाने म लगने वाले आथक ढैिण पर विवंतर से विचार करने के बाद ढकया जाएगा।
15. यढद ढकसी भी समय यह पाया जाता है ढक ढकसी अ यथट ने गलत या अनुचित व ढदया है या अडय धोखेबाज़ तरीक का उपयोग

किया है, जिसके आधार पर उसने अपना ऋण सुरित कर लिया है, तो उसका नाम विवि विवालय के रोल से निकाल दिया जाएगा।

अनुयादेश : 3

[विवा पदरपद द्वारा द. 03/04/2010 को संपु िवतीय बैठक मः और कायः पदरपद

द्वारा

द. 08/05/2010 को संपु िवतीय बैठक मः अनुमोदित]

विवि विवालय के विवाःथः द्वारा देय शुःक

[अधिनयम कः धारा 28(1)(ई) के अंतर्गत]

1. विवा पदरपद कः िसफादरशः पर कायः पदरपद, समय-समय पर विवि ऋयोजनः के िलए विवि

विवालय के छाः द्वारा देय शुःक िनधादरत करेगी।

2. विवि अनुययन कायःमः मः ऋण ऋः सभी विवाःथः को ऋण के समय और बाद के सः

के िलए िनधादरत शुःक का भुगतान विवि विवालय द्वारा अधिसूचित तारीख के भीतर करना होगा।

3. भुगतान मः देरी या ितःमः :

(1) यद कोई छाः शुःक पर समय का भुगतान नहः करता है, तो जुमाना इसके अनुसार लगाया

जाएगा : (i) भुगतान के िलए अंतिम दःन से पहले 10 दःन के िलए शुःक का 10%

(ii) अगले 10 दःन के िलए शुःक का 20%

(iii) अगले 10 दःन के िलए शुःक का 30%

(2) कुलपित, या, उनकः ओर से कोई अयः अधिकारी, िजसे उनकः शिः का अधिकार दिया गया है,

संबंधित विवापीठ के संकायायः कः िसफादरशः पर, देरी को िनरंत कर सकता है या

विशेष मामलः मः छाः द्वारा दः जाने वाले जुमाने को कम कर सकता

है, बशतः क संबंधित विवाथः शुःक के देर से भुगतान के कारणः को बताते ःए एक िलिखत आवेदन

ःतुत करः। इस तरह के आवेदन देय ितिथयः से कम-से-कम एक सःह पहले ःतुत कःए

जाने चाहे।

(3) शुऱक के भुगतान के िलए अधसूचित अंतिम ितिथ से 30 ःदन कऱ समािऱ पर बाकऱदर
अ यथऱ के नाम िवऱ विवऱलय के रोल से हऱ ःदए जाएँगे।

(4) वह िवऱथऱ, िजसका नाम िवऱ विवऱलय के रोल से हऱ ःदया गया है, संबंिधत िवऱपीठ के
संकायायिऱ कऱ िसफाहरश पर और िवऱ विवऱलय ःऱऱा िनधाऱहरत
पुनऱवश शुऱक के साथ बकाया शुऱक और पूणऱ जुमाऱना तथा अऱय देय के
भुगतान के साथ ःफर से भतऱ कराया जा सकता है। हालांऱक, िस तरह के पुनऱवश बशतऱ उसी
सेमेंटर के भीतर और अयूनतम उपिंथित आवंयकता को पूरा करने वाले छाऱ के िलए ही लागू होगा।

(5) जब भी कोई िवऱथऱ िवऱ विवऱलय से दाऱखल वापस लेने का ःंताव करता है, तो वह संबंिधत
िवभाग/ केऱ के अयिऱ के मायम से संबंिधत िवऱपीठ के संकायायिऱ को अपने
दाऱखले के वापसी कऱ तारीख सूचित करने के िलए एक आवेदन ःंतुत करेगा/करेगी।
यऱद वह ऐसा करने मऱ विफल होता/होती है, तो उसने िजस माह के शुऱक का भुगतान
ःकया है, अधिकतम उसी माह कऱ अविध तक उसका नाम िवऱ विवऱलय के रोल पर रखा जाएगा। उसे
िऱ अविध के दूरान आने वाले सभी शुऱक/ःभार का भुगतान भी करना होगा।

4.दऱिहीन िवऱऱथय को छूट :
दऱिहीन िवऱऱथय को सभी शुऱक के भुगतान से छूट दी जाएगी।

¹Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

5

5.शुऱक मऱहरयायत :

(1) शुऱक मऱ हरयायत, ऱिशप का अनुदान और ः ऱिशप का ःतिशत समय-समय पर
संशोिधत िवऱ विवऱलय अनुदान आयोग के िनयम ःऱऱा शासित होगा।

(2) शैिऱक वषऱ के दूरान दी गई ः ऱिशप को अगले वषऱ ँवचालित ःप से नवीनीकृत नहऱ
ःकया जाएगा। ऐसी हरयायत कऱ आवंयकता वाले िवऱऱथय को हर साल नए
आवेदन ःंतुत करने हऱगे, िजन पर वषऱ मऱ ःऱा नए आवेदन के साथ िवचार ःकया
जाएगा।

(3) विवाह को दायें गए ंशिश को र कर दया जा सकता है, यद उसका वहार या अययन मं गित असंतोषजनक पाई जाती है।

(4) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति या विवाहय के दकसी भी अय वगण के लिए शु क क रकम भारत सरकार के निदश के अनुसार होगी।

6. शु क क धनवापसी, सुरा जमा आद :

- (1) यद, शु क का भुगतान करने के बाद, दकसी विवाह को दाखिला र करने क क इच्छा हो, तो वह दाखिला वापसी के लिए एक आवेदन रंतुत करेगा। यद ऐसा आवेदन कुलसिचव द्वारा संबंधित शैिक स के रंभ से कम-से-कम पांच दन पहले रं होता है, तो उसे पंजीकरण शु क के अलावा सभी शु क और जमा वापस कर दयें जाएंगे।
- (2) यद शु क का भुगतान करने के बाद, कोई अ यथ वि विवालय मं उपिंथत नह होता है और यद शैिक स के रंभ होने के बाद लेकन रवेश बंद होने से पहले वि विवालय द्वारा उसका दाखिला वापसी के लिए आवेदन रं होता है, तो उसे पंजीकरण शु क के अतदर रूशन शु क मं से 25% घटाकर बाक सभी शु क और जमाएँ वापस लौटाए जाएंगे।
- (3) शैिक स के लिए रवेश बंद होने के बाद रं होने वाले वापसी के आवेदन पर विवाह को केवल सुरा जमा/अवधाना रािश क ही वापसी मिलेगी।
- (4) विवाह के वि विवालय छोड़ने के बाद उसके आवेदन करने पर उसका सभी बकाया, जुमाना और अय दाव को घटाकर सभी जमा अथवा अवधाना रािश वापसी योय है।
- (5) यद कोई छा वि विवालय छोड़ने के बाद एक कैलंडर वषण के भीतर उसे रंय जमा के लिए दावा रंतुत नह करता है, तो उसे छा सहायता निध मं जूत कर लिया गया माना जाएगा। एक वषण क अविध, विवाह द्वारा आखरी बार लिखे गए परीा के पहरणाम क घोषणा क तिथि या उस दन से गणना क जाएगी, जहाँ से उसका नाम वि विवालय के रोल से हटा दया गया है।

(6) यद्द ठकसी विव्वाथट ने विव्वि विव्वालय कऽ संपिठ को िवित पशुँचाई हो और उसके िलए वह विव्वि विव्वालय को धनराशि देय हो तो उसके सुरिँा जमा से बकाया िशुन शुऽक और जुमाङ्गाने कऽ कटौती कऽ जाएगी।

7. परीँा के िलए शुऽक और हॉल ढटकट

- (1) विव्विथय िलए देय परीँा शुऽक विव्वि विव्वालय िलए िनधाङ्गाने ढकया जाएगा।
- (2) ठकसी भी विव्विथट को तब तक हॉल ढटकट जारी नहऽ ढकया जाएगा अथवा उसे परीँा मथ ही बैठने ढदया जाएगा, जब तक ढक वह देय राशि और परीँा शुऽक का भुगतान नहऽ करता।

8. परीँा पढरणाम कऽ पुनःजाँच के िलए शुऽक :

- (1) परीँा पढरणाम कऽ पुनःजाँच के िलए शुऽक विव्वि विव्वालय िलए िनधाङ्गाने ढकया जाएगा।
- (2) पुनःजाँच करने के िलए भुगतान ढकया गया शुऽक अथयथट को वापस कर ढदया जाएगा, यद्द पढरणाम कऽ पुनःजाँच करने पर, यह पाया जाता है ढक विव्वि विव्वालय िलए अधिसूचित पढरणाम मथ ढकसी भी तरह कऽ िलट या चूक है।

9. अंक-पिँका के िलए शुऽक :

- (1) िलए विव्विथट को परीँा शुऽक के साथ िलए परीँा के िलए अंक-पिँ के िलए विव्वि विव्वालय िलए िनधाङ्गाने शुऽक का भुगतान करना होगा।
- (2) विव्विथय को संबंढित विभाग/कथँ के अथयथट के माथयम से अंक-पिँ भेजे जाएँगे।

10. शुऽक :

िलए शुऽक, पुनःिलए, पंजीकरण, परीँा, पुनःजाँच, अंकपिँ, अंतरण िलए प, अनंतिम िलए प, िडली िलए प, बोनाफाइड िलए प या अडय कोई िलए प और िलए प कऽ नकली िलए िलए विव्वि विव्वालय िलए समय-समय पर जारी अनुसूची के अनुसार होगी।

अण्यदेश : 4

विवा पहरषद ँनारा ढद. 03/04/2010 को संपु ँनतीय बैठक मः और कायः पहरषद ँनारा
ढद. 08/05/2010 को संपु ँनतीय बैठक मः अनुमोढदत]

बी.एससी., बी.एस., बी.ए., एम.ए., एम.एससी. उपाधि अण्ययन कायःम और ँतकोर ङलोमा
अण्ययन कायःम

[अधिनयम कः धारा 28(1) के अंतगःत]

1. संबंधित ङली/ङलोमा ँदान ढकए जाने वाले अण्ययन पाःम को विव विवालय ँनारा
ंथापित और उसके अंतगःत कायःशील विवापीठ/विभाग/कः० अथवा विव
विवालय ने ङिस सहयोगी संंथान के साथ समझौता ँापन ढकया है, के ँनारांंथापित ढकया
जाएगा।

2. पाःम कः अविध :

(1) कला, विवांन, ँौोिगकः, ँदशःन कला और अय विषयः मः ँतकोर के ँिए
एकःकृत अण्ययन कायःम मः ँवेश ढकया जाएगा और ऐसे पाःम कः अविध
सेमेंतर पैटनः मः पाँच साल होगी। विव विवालय 3 व 4 वषः के सफल समापन
के बाद विवाःथयः ँनारा अपने अनुरोध पर ँनकासी विवःप ँदान कर सकता है और
विव विवालय ँनारा ँनधाःरत ँतक ङली के ँप मः पुरंकार ँदान कर सकता है।

(2) सभी ँतक ङली कायःम कः अविध सेमेंतर पैटनः के अनुसार समय-समय पर
ँनधाःरत कः जाएगी। (3) सभी ँतकोर कायःम कः अविध, दो साल या सेमेंतर
पैटनः मः या समय-समय पर ँनधाःरत के अनुसार होगी। यह उन पर लागू होगा,

ङिःहने मायता ँाः विव विवालय और उ ँिशिंा संंथान कः योयता ँाः ँतक
कः ङली के साथ विव विवालय के ँतकोर ङली अण्ययन कायःम मः सीधे ँवेश
लिया है।

(4) ँमाणपः/ङलोमा/ँतकोर ङलोमा अण्ययन कायःम कः अविध विव विवालय
ँनारा समय-समय पर सेमेंतर पैटनः मः ँनधाःरत कः जाएगी। यह उन

लोग के लिए लागू है, जिन्होंने विवेक विद्यालय तथा माउयता के विवेक विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा के माणपू/डिप्लोमा/एतकोर डिप्लोमा अययन कायक्रम के लिए निधाहरत अहता के साथ विवेक विद्यालय के माणपू/डिप्लोमा/एतकोर डिप्लोमा मः सीधे वेश लिया है। 3. वेश के लिए योयता के माणपू/डिप्लोमा/एतकोर डिप्लोमा के लिए पाता के लिए विवेक विद्यालय द्वारा केतुत विभू पाक्रम मः वेश के लिए पाता मानदंड को विवा पहरषद या समय-समय पर इस के लिए अधिकृत कसी अय संथा द्वारा अनुमोदत कया जाएगा।

4. अययन पाक्रम और पाक्रम निमाकरण :

- (1) अययन कायक्रम के पाक्रम संबंधित विवापीठ मंडल द्वारा विभाग/कः या सहयोगी संस्थान कः सिफाहरष पर अनुमोदत हगे ;
- (2) के माणपू/डिप्लोमा कः सामः उन संबंधित विवापीठ मंडल/सहयोगी संस्थान(न)/विभाग/कः द्वारा अनुमोदत होगी ;

Hkkx III μ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

7

- (3) के माणपू/डिप्लोमा के लिए पढ़ने और सीखने कः सामः, संबंधित विवापीठ/विभाग/कः/सहयोगी संस्थान(न) द्वारा निधाहरत के अनुसार होगी।

5. उपिथित

- (1) के माणपू/डिप्लोमा के लिए अयनतम अपेित उपिथित वातव मः आयोजित केा और अय निधाहरत शैिक गतिविधयाँ जैसे संगेी, सु और ावहाहरक सु का 75% है।
- (2) विवेक विद्यालय वैध और ठोस कारण से अनुपिथित को माफ कर सकता है लेकन 5% से अधिक नह, बशतः क संबंधित विवापीठ/सहयोगी संस्थान(न) के संकायायै विभाग के अयै/कः निदेशक से परामश कर इस आशय कः सिफाहरष करः।

- (3) अितहर सह-पाचयाकायकायम मः भाग लेने के िलए िव विवैालय ंद्वारा िनयु िवैाथय को उपरो के अनुसार उपिंथित कः आवयकता मः छूट के अलावा, यथा आवयकता 5% उपिंथित कः हरयायत दी जाएगी। इस तरह कः हरयायत उस कायकायम मः वांतिवक भागीदारी के ढदन के िलए उपलुध होगी, िजसमः िव विवैालय के पूवका-अनुमोदन के साथ याा का समय शािमल है।

6. मूयांकन

िशैण और मूयांकन पर िनयमन अलग से अधसूचित ढकया जाएगा।

7. अययन कायकायम से िवैाथय का िनकासन :

कुलपित संबंथित िवभाग या कः से ढकसी िवैाथ के असंतोषजनक ंदशकायन के संबंथ मः िवैापीठ के संकायायै/िवभागायै/कः िनदेशक/सहयोगी संथान के अयै कः िसफाहरश कः ंाि पर उसे अययन कायकायम से िनकासित कर सकते ह।

अयादेश : 5

[िवैा पहरषद ंद्वारा ढद. 03/04/2010 को संपु िंतीय बैठक मः और कायकायम पहरषद

ंद्वारा ढद. 08/05/2010 को संपु िंतीय बैठक मः अनुमोढदत]

एम.ढफल. उपाधि अययन कायकायम

[अधिनयम कः धारा 28(1) के अंतगकात]

1.संबंथित िवैापीठ/िवभाग/कः/सहयोगी संथान ंयेक पाकायम कः सामली तैयार करुगे और

एम.ढफल. अययन कायकायम के िलए अपनाए जाने वाली पति और अनुदेशांक उपकरण को िनंद करुगे।

2.एम.ढफल. पाकायम कः अविध एक वषका होगी जो ढक दो सेमेटर मः पूवका होगी।

3. ँवेश के िलए योयता : ँयोक वषभ्ण मथ िव विवैालय ँनैारा ँतावित िविभु एम.फल पाडम मथ ँवेश के िलए पाता मानदंड, समय-समय पर इस उेय के िलए अधकृत विवा पहरषद/या ढकसी अउय संथा ँनैारा अनुमोदत ढकया जाएगा।

4. ँवेश ँडया :

(1) एम.फल. अययन कायभ्णम मथ ँवेश के िलए सभी आवेदन पर विवापीठ/विभाग/कथं कड ँवेश सिमित ँनैारा विचार ढकया जाएगा और सिमित यह िसफाहरश करेगी ढक (i) या अयथट को केवल एम.फल. अययन कायभ्णम के िलए ही भतट कराया जाए या (ii) या अयथट को एम.फल. अययन कायभ्णम मथ भतट कराया जाना चाहिए और पीएच.डी. अययन कायभ्णम से संबंथित अययादेश मथ ँदान कड गई पी.एच.डी. कड िडली के िलए अनंतिम षप से नामांकत ढकया जाना चाहिए।

(2) यढद कोई अयथट एम.फल. अययन कायभ्णम मथ ँवेश के िलए योय पाया जाता है, तो उसका ँवेश संकायायि/विभागायि/कथं िनदेशक ँनैारा ँवेश सिमित कड िसफाहरश पर उस कायभ्णम मथ ढकया जाएगा।

हालांढक, यढद कोई अयथट ँवेश सिमित ँनैारा पीएच.डी. अययन कायभ्णम के िलए अनंतिम ँवेश के िलए योय पाया जाता है, तो उसका ँवेश भी कराया जाएगा बशतः ढक संबंथित विवापीठ मंडल उसकड पुि करे। 5.उपिंथित :

(1) उयूनतम आवंयक उपिंथित वांतव मथ ँयोक पाडम मथ आयोजित कड गई कंा और संगेपी, सू और ँयोग आढद जैसी अउय िनधाभ्णरत अधगम संबंधी गितिविधय को िमलाकर 75% है।

(2) विव विवैालय वैध और ठोस कारण से अनुपिंथित को माफ कर सकता है लेढकन 5% से अधक नहः, बशतः ढक संबंथित विवापीठ/सहयोगी संथान(न) के संकायायि विभाग के अययि/कथं िनदेशक से परामशभ्ण कर इस आशय कड िसफाहरश करथ।

(3) अितहर सह-पाचयाभ्ण कायभ्णम मथ भाग लेने के िलए विव विवैालय ँनैारा िनयु

विवांथय को उपरो के अनुसार उपिंथित कऽ आवंयकता मऽ छूट के अलावा, यथा
 आवंयकता 5% उपिंथित कऽ ढरयायत दी जाएगी। इस तरह कऽ ढरयायत उस कायऱ्णम मऽ
 वांतिवक भागीदारी के ढदन के िलए उपलब्ध होगी, िजसमऽ विं विवांलय के
 पूवऱ्ण-अनुमोदन के साथ याा का समय शािमल है।

6.एम.ढफल. पाऱ्णम के िलए सलाहकार कऽ िनयुि

एम.ढफल. पाऱ्णम के ेयेक छा के िलए एक सलाहकार होगा, जो संबंिधित
 विवापीठ/विभाग/कऽं िनयुि ढकया जाएगा। 7.लघु शोध-ेबंध का विषय
 विवाथऽ िनयुि ेत्तु ढकए जाने वाले लघु शोध ेबंध, विविनबंध या शोध प के विषय, संबंिधित
 सलाहकार के मायम से अ यथऽ िनयुि ेत्तु ढकये गये ेत्ताव के आधार पर
 विवापीठ/विभाग/कऽं िनयुि अनुमोढदत होगा। 8.मूय यांकन
 िशेण और मूय यांकन पर िनयमन अलग से अधिसूचित ढकया गया है।

9.अययन कायऱ्णम से विवांथय का िनृकासन :

कुलपित संबंिधित विभाग या कऽं से ढकसी विवाथ के असंतोषजनक ेदशऱ्णन के संबंध मऽ
 विवापीठ के संकायायि/विभागायि/कऽं िनदेशक/सहयोगी संथान के अयि कऽ
 िसफाहरश कऽ ेाि पर उसके अययन कायऱ्णम से िनृकासन को अनुमोढदत कर सकते ह.।

अयदेश : 6

[विवा पहरषद िनयुि ढद. 03/02/2012 को संपु पाँचवी बैठक मऽ और कायऱ्ण पहरषद
 िनयुि ढद. 09/06/2012 को संपु छठी बैठक मऽ अनुमोढदत]

पी.एचडी. अययन कायऱ्णम

[केउीय विं विवालय अधिनयम कऽ धारा 28(1) के अंतगऱ्णत]

अनुच्छेद :

1.ेत्तावना

2.िनदश और ेबंध लेखन कऽ भाषा

3. पीएच.डी. अण्ययन कायभ्रान्म मथ पंजीकरण के िलए योयता
4. पीएच.डी. अण्ययन कायभ्रान्म मथ पंजीकरण कऽ ुडया
5. शोध िनदशक
6. कोसभ्रान् वकभ्रान् एवं ुगित ुतितवेदन कऽ ुतुति
7. कोसभ्रान् वकभ्रान् के मूय यांकन/परीा के िलए ुडया

Hkkx III[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

9

1. ुतावना :

- 1.1. िव विवालतय मथ िजन अण्ययन कायभ्रान्म ँतकोर अण्ययन एवं/या शोध कायभ्रान्म के िलए ुावधान उपलध ह., पीएच.डी. अण्ययन कायभ्रान्म मानिवक/िवीान/समाज िवीान/िशिा इयाद मथ से ढकसी भी अनुशासन मथ डॉटर ऑफ ढफलॉसफऽ कऽ उपाधि ुदान करने के िलए आयोजित ढकए जाएँगे।
- 1.2. डॉटर ऑफ ढफलॉसफऽ (पीएचडी) कऽ उपाधि उसी िवाथट को दी जाएगी, िजसने मूल शोध कायभ्रान् को शोध-ुबंध मथ ुतुत ढकया है, िजसकऽ परीक मंडल ने िसफाहरश कऽ है और मौखिकऽ परीा सफलतापूर्वक पूणऽ ढकया है।
- 1.3. शोध-ुबंध यह ुदशत करेगा ढक िवाथट िवऽापूणऽ काम करने मथ सीम है। शोध-ुबंध मथ ुतुत ढकए गए शोध के पहरणाम मौजूदा िान मथ नए तःय या िसंत कऽ खोज हो या कुछ नए संबंध कऽ पहले से ही िात या महवपूण तःय के सवऽण कऽ खोज हो, िजससे ढक नई तकनीकऽ कऽ िववेचना या िवकास हो।

2. िनदश और ुबंध लेखन कऽ भाषा :

िन्िलिखत मामल को छोड़कर, पीएच.डी. अण्ययन कायभ्रान्म मथ अंजी सामायतः िशिा के मायम के साथ-साथ शोध कऽ भाषा भी होगी :

- भाषा िवभाग मथ, िशिा का मायम और साथ ही शोध-ुबंध िलखने कऽ भाषा, िवभाग कऽ संबंधित भाषा होगी। संबंधित िवभागीय अनुसंधान सिमित कऽ िसफाहरश पर अनुसंधान बोडऽ िारा ऐसी अनुमित दी जाएगी।

3. पीएच.डी. अर्जियन कायक्षणम मं पंजीकरण के लिए योग्यता :

3.1. पीएच.डी. अर्जियन कायक्षणम मं पंजीकरण के लिए आवेदक के पास संबंधित अथवा समवर्ग विषय मं अ्यूनतम 55% के साथ िनृणात उपाधि (दो साल कऽ अविध) हो और उससे पूर्व मायता ्र वि विवैालय/संथान से तीन वर्ष कऽ अविध कऽ समकै ुातक उपाधि ्र होनी चाहिए। भारत सरकार के िनयम के अनुसार आरिंत ेणिय से संबंधित आवेदक को छूट दी जाएगी।

3.2. उपयुक् के अितर, आवेदक को िन शत मं से ढकसी एक को भी पूरा करना होगा :

- ि मं से ढकसी एक परींा मं उकीण हो : नेट परींा (यूजीसी/सीएसआईआर िनारा आयोजित) आईसीएआर/आईसीएमआर/आऽ िनारा संचालित ंलेट, गेट या समकै र्तीय ंतर कऽ परींाएँ।
- यूजीसी िशैक फैलोशिप धारक
- तिमलनाडु के ्रीय वि विवैालय अथवा यूजीसी िनारा मायता ्र ढकसी अय वि विवैालय कऽ एम.ऽफल. उपाधि ्र हो, जो ढक यूजीसी (एम.ऽफल./पीएच.डी. उपाधि के लिए अ्यूनतम मानक और ंऽऽया), िविनयमन 2009 का पालन करती हो।
- CUTNRET उकीण हो (CUTNRET कऽ वैधता, एक बार उकीण होने के बाद, पहरणाम के ंकाशन कऽ तारीख से दो साल तक होगी)

3.3. CUTNRET आमतौर पर हर साल फरवरी और अगंत के महीन मं आयोजित ढकया जाता है, लेऽकन वि विवैालय अपने अनुसंधान कायक्षणम कऽ आवैयकता के आधार पर वर्ष मं इसे दूसरी बार रखने का अधिकार सुरित रखता है। शैैक विभाग/कं के परामश से, CUTNRET का ंकार और संरचना वि विवैालय िनारा िनधाऽरत ढकया जाएगा। CUTNRET परींा देने के लिए योग्यता उपरो अनुछेद संया 3.1. के अनुसार होगी।

4. पीएच.डी. अर्जियन कायक्षणम मं पंजीकरण कऽऽया :

- 4.1. आवेदन मं से जो अनुच्छेद संख्या 3 के अनुसार योग्यता मानदंड पूरुण करता हो, उहल विवांथय को पीएच.डी. अययन कायकुलम मं शैिक वषकुल मं दो बार (आमतौर पर 15 सितंबर और 15 माकुल से पहले) सभी कुकुल का अनुसरण करने के बाद तथा बाद मं वरुणत के अनुसार कुवेश ठदया जाएगा।
- 4.2. पीएच.डी. अययन कायकुलम कुंतुत करने वाले सभी विवापीठ क कुवेश समितयाँ, िजनके तहत एक या एक से अधिक शैिक विभाग/कुंठ मं यह कायकुलम कुंतुत है, वरुषक आधार पर अनुच्छेद सं. 5.1. के तहत िनंद के ढप मं उपलुध योग्य संकाय िनदशक क संख्या के आधार पर पीएच.डी. के िलए पूरुण िनधाकुलरत और कुबंधनीय सीट क संख्या िनधाकुलरत करुगी। पीएच.डी. कायकुलम के िलए सीट क ँवीकृत संख्या को विं विवलय क वेबसाइट पर अधसूचित ठकया जाएगा।
- 4.3. पीएचडी क पेशकश करने वाले विवापीठ क कुवेश समितयाँ CUTNRET मं उकुीणकुल होने के बाद के पंजीकरण सहत, पीएच.डी. कायकुलम मं पंजीकरण के िलए अधसूचना का मसौदा तैयार करुगी और विं विवलय क वेबसाइट पर इसे कुकाशन के िलए भेजने से पहले कुयेक वषकुल विं विवलय के शैिक/परींा अनुभाग ँलराना अनुमोठदत करुगी।
- 4.4. पीएच.डी. कायकुलम मं पंजीकरण के िलए आवेदक, उस संबंध मं जारी अधसूचना के अनुसार विभागलरुं/संकायालरुं को अपेिंत शुक के साथ िनधाकुलरत कुाडप मं आवेदन करेगा/गी। आवेदन के साथ आवंयक दंतावेज/कुशंसापू क सांय कुतियाँ और उनके संबंधित अनुसंधान के ँच के ँंरु पर एक संिंरु विवरण देना होगा। आवेदक को अलग-अलग कायकुलम के िलए अलग-अलग आवेदन पू जमा करना होगा। CUTNRET मं संबंधित आवेदक के योग्यता-कु क िंथित के बावजूद अययन कायकुलम के बदलाव के िलए ठकसी भी तरह के िनवेदन पर विचार नहल ठकया जाएगा।
- 4.5. CUTNRET परींा के िलए आवेदन पू कुां करने क अंतिम ितिथ के बाद संबंधित विभाग क कुवेश समितयाँ आवेदन का अनुवींण करेगी और संबंधित विभाग के साथ-

इसलिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखी जा सकती हैं। पीएच.डी. कायकाल में पंजीकरण के लिए अपेक्षाकृत शुरुआत का भुगतान करना होगा। पीएच.डी. कायकाल में पंजीकरण के लिए शुरुआत का भुगतान कस तिथि को ही कायकाल में पंजीकरण कस तिथि के रूप में माना जाएगा। पीएच.डी. कायकाल के शोधार्थ के पंजीकरण का कायकाल कायकाल में अपने पंजीकरण कस तिथि से तीन वर्षों के अवधि के लिए होगा। जो पीएच.डी. शोधार्थ तीन वर्षों के भीतर अपना/उसका शोध-संबंध पूरा करने में असमर्थ है, वह अपने मूल पंजीकरण के कायकाल के पूरा होने से कम-से-कम तीन माह पहले पुनः पंजीकरण के लिए आवेदन कर सकता है। ऐसे आवेदन को अनुसंधान बोर्ड के अनुमोदन के लिए संबंधित विभागीय अनुसंधान समिति द्वारा अनुशंसित करना होगा।

1. Hkkx III [k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

11

शोधार्थ पुनः पंजीकरण के लिए अपने आवेदनक शुरुआत का भुगतान करेगा और पुनः पंजीकरण मूल पंजीकरण कस तिथि से एक वर्ष के एक और अवधि के लिए वैध होगा। यद्यपि और जब कोई शोधार्थ अपना पीएच.डी. शोध-संबंध जमा करेगा/गी और पदनाम घोषित कर जाने के बाद, वह उस कायकाल के शोधार्थ नही कहलाएँगे। विभागीय अनुसंधान समिति, यद्यपि आवेदनकता हो, इसी शोधार्थ के शोध-निदेशक और सह-शोध निदेशक के औपचारिक अनुरोध पर, यद्यपि कोई हो, उपयुक्त मामले में पीएच.डी. पंजीकरण को रद्द करने पर विचार कर सकते हैं। और अंतिम अनुमोदन के लिए अनुसंधान बोर्ड को मामले के अनुशंसा कर सकते हैं।

अनुशासनात्मक कार्रवाई से संबंधित मामलों में, अतः, विभागीय अनुसंधान समिति, पंजीकरण रद्द करने के अंतर्गत कायकाल ही कर सकती है।

5. शोध निदेशक :

5.1. शोधार्थ को पीएच.डी. कायकाल में पंजीकरण के बाद शोध-निदेशक के मागदशान में काम संपादित होगा।

शोध-

निदेशक का आवेदन संबंधित विभागीय अनुसंधान समिति द्वारा औपचारिक रूप से निम्न

लिखित पर

विचार कर तय कर दिया जाएगा :

क) योग्य पदवी (क) के अधीन पीएच.डी. शोधार्थ कस संघ,

ख) संबंधित पीएच.डी. शोधार्थ कस शोध विधि और

ग) योय पयक्कावैक (क) कऽ उपलब्ध विशेषता और कायक्कावे

विभागीय अनुसंधान समित यह सुनिश्चित करेगी ठक एक शोध-निदेशक के पास ठकसी भी समय आठ से उयादा पीएच.डी. शोधार्थ न ह, अपने सह-शोध निदेशक के अधीन को मिलाकर (यहाँ

5.4.1, 5.4.2 और 5.4.3 मऽ पहरभाषित ठकया गया है) लेकन उन छाो को छोड़कर, जो पहले से

ही अपने शोध ँबंध/लघु शोध-बंध ँंतुत कर चुके ह। असाधारण मामल मऽ, विभागीय

अनुसंधान समित उचित निणक्कय लेगी। शोध-निदेशक का आवंटन ँ ँगत शोधार्थ या

िशैक पर नह छोड़ा जाएगा।

5.2. विभागीय अनुसंधान समित यह भी सुनिश्चित करेगी ठक ठकसी भी कारण, कोई भी शोधार्थ छह महीने से अधिक के लिए शोध-निदेशक के बिना नह रहऽ। शोध-

निदेशक कऽ अनुपिथित के दौरान, संबंधित विभाग/कऽ के अयै ँमुख शोध-निदेशक के

प मऽ कायक्क करेगा, उन मामल के अलावा, जहाँ विवि विवालय के भीतर एक

सह-शोध निदेशक मौजूद है। यद विवि विवालय के भीतर एक सह-शोध निदेशक है, तो सह-शोध

निदेशक, निदेशक कऽ वापसी तक सभी ँावहारक उैय के लिए शोध-निदेशक

के प मऽ कायक्क करेगा। विभागीय अनुसंधान समित ँारा औपचारक ँतिंथापन करने

तक इस तरह कऽ गई अंथायी ँतिंथापन कऽ ँ वंथा कऽ जाएगी और इस

अंथायी ँ वंथा को उपरो लेख 5.1. मऽ उिलिखत एक शोध-

निदेशक/सह-शोध निदेशक के अधीन शोधार्थ के शोध-निदेशन कऽ अधिकतम अनुमत संया

का अनुपालन सुनिश्चित करने के उैय से पीएचडी कऽ संया कऽ गणना के लिए नह

माना जाएगा।

5.3. विभाग/कऽ के अयै को पीएच.डी. शोधार्थ पर ँशासिनक नियंण रखना होगा। हालांठक,

इस ँशासिनक नियंण का सामाउय तौर पर संबंधित शोध-निदेशक के मायम से ँयोग ठकया

जाएगा।

5.4. शोध-निदेशक और सह-शोध निदेशक कऽ योयता :

5.4.1. वे सभी ँोफेसर, एसोिसएट ँोफेसर और सहायक ँोफेसर ँिउहने पीएच.डी. कऽ

उपाधि ली है और उनके पद मऽ ँथायव पा चुके ह., पीएच.डी. शोधार्थ के शोध-

निदेशक के प मऽ कायक्क करने के लिए पा हगे। पाता संबंधी आवयकता को

पूरा करने वाले सहयोगी संस्थान/विश्वविद्यालय के शिक्षक भी निदेशक/सह-निदेशक/पयक्कावेक बन सकते ह।

5.4.2. ऊपर वर्णित के अनुसार चयन पीएच.डी. शोधार्थ के लिए नामित निदेशक के अलावा, संबंधित विभागीय अनुसंधान समित, विश्व विद्यालय के एक अध्यक्ष प्रोफेसर या एसोसिएट प्रोफेसर या सहायक प्रोफेसर क सह-निदेशक के रूप में नियुक्ति पर विचार कर सकती है, बशतः कि वह अनुच्छेद 5.1. और 5.4.1. के अनुसार पीएचडी के लिए सह-निदेशक के रूप में योग्य हो। अनुसंधान क गुणवत्ता में सुधार और यद संबंधित पी.एच.डी. शोधार्थ के शोध का प्रोत्साहित

सह-निदेशक क विशेषता और कार्यप्रणाली प्रकृति में एकसमान पाया जाता है। पीएच.डी. संख्या क गणना के उद्देश्य के लिए एक योग्य निदेशक के अधीन, ऐसे सभी सह-निदेशक के कार्य क गणना भी क जाएगी। कोई भी निदेशक, किसी भी समय में, आठ से ज्यादा पीएच.डी. शोधार्थ और पाँच एम.एफ.एल शोधार्थ से अधिक नहीं शोधार्थ नहीं ले पाएगा।

5.4.3. यूजीसी अनुसंधान वैज्ञानिक, समकालीन वर्ग के

विश्व, राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय स्तर के प्रतिस्पर्धी जो

विश्व विद्यालय अथवा किसी प्रतिस्पर्धी राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय संस्थान में लगातार कम-से-

कम पाँच वर्ष (पीएच.डी. कार्यप्रणाली में पंजीकरण के

लिए संबंधित आवेदक द्वारा आवेदन के समय) या अनुसंधान के

संबंधित प्रमुख वैश्विक प्रतिस्पर्धी के विदेशी/अंतराष्ट्रीय विवरण को सह-

निदेशक (उनक सहित के साथ) के रूप में नामित किया जा सकता है, यद संबंधित अनुसंधान बोर्ड का मानना है कि इस

तरह क नियुक्ति अनुसंधान क गुणवत्ता में सुधार करेगी। ऐसे सह-निदेशनाधिकार तब भी प्रभावी होंगे जब सह-निदेशक विश्व

विश्व विद्यालय या संस्थान छोड़ देगा, जहाँ वह सह-निदेशक के रूप

में अपनी नियुक्ति के समय नियोजित किया गया था।

5.4.5. पीएच.डी. शोधार्थ का कोई भी निनकट संबंधी निनदशक या सह-निनदशक के ३५ मं कायका नह कर सकता।

5.4.6. ोफेसर, एसोसिएट ोफेसर या सहायक ोफेसर, िजहने ँवयं को इस िवं विंालय अथवा ढकसी अय िवं विंालय कऽ पीएच.डी. उपाधि के िलए पंजीकृत ढकया है, अपने ँवयं के पीएच.डी. छावृि के कायकाल के दौरान निनदशक या सह- निनदशक के ३५ मं योय नह होगा/होगी।

5.4.7. यढद कोई निनदशक िवं विंालय कऽ सेवा से अपने िंथय िनारा शोध-बंध ुंतुत करने से पहले ही सेवानिवृ हो जाता/जाती है लेढकन िवं विंालय के निनकटवत े मं रहता/रहती है, तो सेवानिवृि कऽ ितिथ से दो वष कऽ अधिकतम अविध तक वह निनदशक के ३५ मं कायका करना जारी रख सकता/सकती है।

5.4.8. निनदशक और सह-निनदशक पीएच.डी. परींा ँढया मं परींक के ३५ मं कायका कर सकते ह.।

6. कोसका वकका एवं ँगित ँितवेदन कऽ ुंतुति :

6.1.1. सभी पीएच.डी. कोसका वकका पूणकाकालिक आधार पर होगा।

6.1.2. मायता े िवं विंालय से यूजीसी िविनयमन, 2009 (एम.ढफल./पीएच.डी. उपाधि के िलए ँयूनतम मानक और ँढयाँ) का अनुपालन करते ँए एम.ढफल. उकीणका ढकए ँए िंथय को छोड़कर, सभी पीएच.डी. शोधार्थ को एक सेमेंतर कऽ अविध के िलए कोसका वकका करना होगा। हालांढक, पीएच.डी. शोधार्थ ने, िजसने यूजीसी िविनयमन, 2009 (एम.ढफल./पीएच.डी. उपाधि के िलए ँयूनतम मानक और ँढयाँ) का अनुपालन करते ँए, पहले अययन के उसी े मं एम.ढफल. ढकया है, उसे कोसका वकका से छूट दी जाएगी और उसे संबंढित िवभागीय अनुसंधान सिमित के समीं ुंतावित अनुसंधान के शीषका के साथ शोध-सार ुंतुत करना होगा, जो अनुच्छेद 6.2. के ँावधान के अनुसार उस पर ँढया करेगा।

6.1.3. कोसभा वक्ता का विवरण निम्नलिखित अनुच्छेद 7 के अनुसार होगा। पीएच.डी. शोधार्थी

द्वारा ठकए जाने

वाला

कोसभा वक्ता सामाज्यतः संबंधित विभाग द्वारा आयोजित ठकया जाता है, जिसमं वह पंजीकृत

है। हालांकि, कोसभा वक्ता विविधालयांतर्गत ठकसी अय विभाग मं भी ठकया जा सकता

है, यद अय

विभाग

क विभागीय अनुसंधान समित क सहमित से, विभाग क विभागीय अनुसंधान समित क विशेष

सिफारश पर अनुसंधान बोड द्वारा अनुमोदत ठकया गया है, जिसमं छा पंजीकृत ठकया गया

है। ऐसे ँताव के अनुमोदन के लिए, यह अनिवार्य है ठक उस पीएच.डी. शोधार्थी के

ँतावित शोध

अय

विभाग द्वारा आयोजित कोसभा वक्ता क सामग्री ँकृत मं समान या अतः

पी या

सामाज्य होनी चाहिए।

Hkkx III[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

13

6.2. कोसभा वक्ता पूरा करने के बाद, पीएच.डी. शोधार्थी को संबंधित विभागीय अनुसंधान समित के

सम

ान क खोज के लिए ँताव मं ँतावित अनुसंधान विषय,

विध और पदकि, पत नवीन योगदान

सिहत अपने

अनुसंधान काय पर विवृत अनुसंधान ँताव ँतुत करना होगा। संबंधित विभागीय

अनुसंधान समित, अनुसंधान बोड के विचाराथ अपनी सिफारश अर्पित करेगा, जिसका

निर्णय इन

संबंध मं अंतिम

होगा। शोध-बंध का शीघ्रक अर्पित मं और संबंधित विभागीय अनुसंधान समित और

अनुसंधान बोड द्वारा अनुमोदत ठकसी अय भाषा मं भी लिखा जाएगा।

संबंधित विभागीय अनुसंधान समित शोध विषय के शीघ्रक मं ठकसी भी संशोधन के लिए

अपनी

सिफारश, यद आवश्यक हो, तो अनुसंधान बोड के विचाराथ

भेजेगी।

6.3. सेमेंटर मं सफलतापूर्वक कोसभा वक्ता पूरा होने के बाद, पीएच.डी. शोधार्थी को ँयेक

शैक्षणिक वर्ष पूरा

करने पर अग्रयन के

संबंधित बोर्ड के समीक्षा वाषिक अंगित हरपोट अंगित करने का आवश्यकता होती है,

जिसे उसके निदेशक द्वारा विधिवत समर्थन दिया जाएगा। अनुसंधान बोर्ड जहाँ से जहाँ

अंगित हरपोट

का आकलन करेगा और

केवल उन हरपोट को, जो असंतोषजनक माने जाएँगे, संबंधित शोध निदेशक को

को

उपयुक्त सलाह के साथ, विभागीय अनुसंधान समित को अधिषित करेगा।

6.4.

पीएच.डी. शोधार्थी को अधिनियम के लिए शोध-अवधि/विनिबंध अंगित करने से पूर्व अक्षी

निर्णायक

प्रकाश एक शोध प्र

अंशित करना होगा और संबंधी अंगण के प्र मं वीकृति प्र या

पुनर्मुख का साथ अंगित करना होगा।

6.5. शोध-अवधि जमा करने से पहले, शोधार्थी को विभाग मं पूर्व-एम.एफ.एल./पीएच.डी. अंगित देना

होगा,

जो अक्ष अंगित करने और अंगण अंगित करने के लिए, सभी

संकाय सदस्य और शोधार्थी के लिए

सावधानिक

होगा, जो अक्ष निदेशक के सलाह के अनुसार शोध-अवधि मं उचित प्र से शामिल हो सकते

ह.।

7. कोस अक्ष के मूल्यांकन/परीक्षा के लिए अंगण :

7.1. कोस अक्ष का संरचना :

(क) तीन तरह के अंगण पा सकते ह., 'केवल सैमांतिक पांगण', 'केवल अवहारक

पांगण' और 'सम

पांगण'। सम पांगण मं दोन -

सैमांतिक और अवहारक घटक हंगे।

(ख) पीएच.डी. कायंगण के विभि पांगण मं अंग का वितरण निनुसार हंगे :

i. 'केवल सैमांतिक पांगण' के लिए

समांत परीक्षा : 80

आंतरक मूल्यांकन : 20

कुल : 100

ii. 'केवल ्र ावहाहरक पााडम' के िलए

स्र्ांत ँायोगिक परीा : 80

आंतहरक मूयांकन : 20

iii. 'केवल समऱ पााडम' यथा – िसांत एवं ँयोग के िलए (70:30)

स्र्ांत सैांतिक परीा : 50

स्र्ांत ँायोगिक परीा : 50

आंतहरक मूयांकन : 20

कुल : 100

(ग) आंतहरक मूयांकन

ंयेक पााडम के िलए आंतहरक मूयांकन अलग-अलग ाप के कम-से-कम दो परीा के सतत मूयांकन के ाप मः ढकया जाएगा (ूूटोहरयल, क्ांतगतात उेयपरक परीा, िनबंध, मौखिक, ँोहरी, असाइनमंट/टमऱ पेपर, क्ांतगतात संगेी, समूह चचाऱा इाद)। यह परीाण पूरे सेमेटर भर चल सकता है लेकन यह स्र्ांत परीा ँारंभ होने से 15 ढदन पहले पूणऱ हो। कम-से-कम 50% परीाण िलिखत ाप मः होना चाहिए। जो िवाथट स्र्ांत परीा मः शािमल होने मः िवफल रहता है, लेकन ँयेक पााडम के आंतहरक आकलन (निरंतर मूयांकन) को पूणऱ कर चुका हो, िवाथट के आंतहरक मूयांकन के अंक उसकऱ अगली संभावना के दौरान माय रहगे लेकन यढ कोई िवाथट अनुपिथत रहता है या आंतहरक मूयांकन मः भी कम अंक लेता है या शूयांक ँा करता है, स्र्ा समूह हो जाने के बाद उसे आंतहरक मूयांकन के िलए पुनः अवसर कऱ अनुमित नहऱ दी जाएगी।

7.2. पााडम :

पााडम कऱ अविध : अनुछेद 6.12 के अनुसार

पााडम सं. 1 :

अनुसंधान ँविध और तकनीक - 4 ढेडिट/100 अंक

पाढम सं. 2 :

वैकिक पाढम (विकप मः चयन करना होगा - 4 ढेडिट/100 अंक अययन के

ेके ापक के

मः कई पाढम ह., िजनमः शोध कः ढदशा मः शोध ढकया जाना है)

पाढम सं. 3 - 4 ढेडिट/100 अंक

शोध के ँासंगिक के मः ँकािशत शोध कायः और शोध के ँंतावित के पर

िलिखत ँंतुत कः समीा करना। उपरो सभी पाढम मः योयता अंक - 50%

7.2.1. पीएच.डी. कायःम मः पाढम के िलए ढेडिट या अंक	ढेडिट अंक	अंक
1	4	100
2	4	100
3	4	100

अयादेश : 7

[िवं पढरषद ँः 03/02/2012 को संपु पाँचवी बैठक मः और कायः पढरषद

ँः 09/06/2012 को संपु छठी बैठक मः अनुमोढदत]

दीांत समारोह

(पढरिनयम 29 के अंतगःत)

1. क. उपाधियाँ देने के उेय से दीांत समारोह सामाःय तौर पर एक वषः मः एक बार, ऐसी ितिथ और जगह पर आयोजित ढकया जाएगा, जैसा ढक कुलपित ँः कुलाधित के पूवः अनुमोदन तय ढकया जाएगा।

ख. िव विवलय के अकादिमक कैलडर मः, पाढम और परीा जैसे अकादिमक गितिविधय के अलावा, उपाधि ँदान करने कः ितिथ(याँ) भी शािमल ह. ;

Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

15

ग. यद्द आवश्यक हो, तो विवि विविालय एक वर्ष मथ एक बार से अधिक बार उपाधि ेदान करना निधा म्हरत कर सकता है और उसे अकादिमक कैलशुडर मथ शामिल ढकया जाएगा ;

घ. उपाधि ेदान करने कऽ ितिथ, सामाउय ढप से ितिथ/य के 180 ढदन के भीतर होगी, िजसके ढद्वारा विविाथय को अह म्हरता ेा करने और उसके िलए योय होने कऽ उमीद होती है ; हालांढक, विवि विविालय िबना ढकसी शत म्हरत के पुरंकार कऽ ितिथ को बदल सकता है।

2. मानद िडली देने के उेय से िवशेष दींांत समारोह, ऐसे समय मथ आयोजित ढकया जा सकता है, जो काय म्हरकारी पहरषद ढद्वारा तय ढकया जा सकता है।

3. कोलेजियम मथ कोट म्हरत, काय पहरषद, विवि पहरषद, विविपीठ के संकायायँ और विभाग के अयँ सिमित हगे।

कुलाधिपति, यद्द उपिंथत हो, तो िडली ेदान करने के िलए विवि विविालय के दींांत समारोह मथ अयँता करगे। कुलाधिपति कऽ अनुपिंथित मथ, कुलपति, दींांत समारोह मथ अयँता करगे।

4. दींांत समारोह कऽ सभी बैठक के िलए कुलसिचव ढद्वारा कम-से-कम चार सूाह कऽ नोढस दी जाएगी।

5. कुलसिचव नोढस के साथ, दींांत समारोह के ेयेक सदंय को अनुसरण कऽ जाने वाली काय म्हरत म ेढया जारी करगे।

6. िजन अ यथय ने उसी वर्ष मथ अपनी परींा उणीण कऽ है, िजसमथ दींांत समारोह आयोजित ढकया गया है, उहथ दींांत समारोह मथ ेवेश ढदया जाएगा।

बशतः ढक यह ेथम दींांत समारोह पर लागू नहल होगा, िजसमथ सभी पूर्व म्हरत वष के अ यथय को भी उनके संबंढित िडली मथ भत करारा जाएगा।

बशतः यह भी ठक यऽद ठकसी वषऱ्ण मऱ् दीर्ऱांत समारोह आयोजित नहऱ ठकया गया तो कुलपित औपचाऱरक दीर्ऱांत समारोह कऽ ँर्तीर्ऱा ठकए िबना उर्मीदवार को िडऱी के िलए िनधाऱ्णऱरत शुऽक भुगतान करने पर अर् यऱथय को संबंिधित िनधाऱ्णऱरत िडऱी ँर्दान करने के िलए र्ऱोम हर्गे।

िडऱी के इस तरह के ँर्ाऱ्कताऱ्ण को सामाऱयतः सामाऱय ँर्बोधन पर हर्तार्ऱर करऱगे, िजन पर उऱहऱ सामाऱय ऱप से आयोजित दीर्ऱांत समारोह मऱ करना होता है।

बशतः ठक यऽद ठकसी िवशेष वषऱ्ण मऱ दीर्ऱांत समारोह आयोजित नहऱ ठकया जाता है, तो कुलपित को उन सभी योर्य उर्मीदवार के ँर्वेश के िलए अिधकृत करना होगा, जो अगले दीर्ऱांत समारोह मऱ दी जानेवाली िडऱी के माऱ्यम से संबंिधित िनधाऱ्णऱरत शुऽक के भुगतान पर अपनी िडऱी ँर्ाऱ् करना चाहते हर्।

बशतः ठक जो लोग अनुपिंथित मऱ अपनी िडऱी ँर्ाऱ् करना चाहते हर्, जबऽक दीर्ऱांत समारोह िनयिमत ऱप से आयोजित ठकया जाता है, तो ऐसा सामाऱय शुऽक के भुगतान के बाद ठकया जा सकता है।

7. क. जो अर् यथऱ िडऱी लेना चाहता है, उसे इस उर्ेर्य के िलए िनधाऱ्णऱरत शुऽक के साथ िनधाऱ्णऱरत ितिथ को या उससे पूर्वऱ्ण ँर्ऱोर्य ऱप से िडऱी लेने के िलए अपना आवेदन कुलसिचव को जमा करना होगा।

ख. िवर् विवर्ालय िनधाऱ्णऱरत ितिथ/यर् से कम-से-कम 30 ऽदन पहले िडऱी ँर्दान करने के कायऱ्णऱम को सूिचित करेगा ताऽक उर्मीदवार इसके िलए आवेदन कर सकऱ :

8. यऽद अर् यथऱ ँर्ऱोर्य ऱप मऱ दीर्ऱांत समारोह मऱ आने मऱ असमथऱ्ण हर्, कुलािधपित ँर्ऱा अर्ऱोर्य ऱप मऱ िडऱी लेने के िलए अनुमित ँर्दान कऽ जाएगी या उनकऽ अनुपिंथित मऱ कुलपित ँर्ऱा और उनके िडऱलोमा कुलसिचव ँर्ऱा आवेदन के आधार पर िनधाऱ्णऱरत शुऽक के भुगतान करने के बाद ऽदए जाएँगे।

9. दीर्ऱांत समारोह मऱ ँर्ऱोर्य मऱ िडऱी लेने के िलए फऽस समय-समय पर िनधाऱ्णऱरत होगी।

10. मानद िडऱी केवल दीर्ऱांत समारोह मऱ ँर्दान कऽ जाएगी और वह ँर्ऱोर्य मऱ या अर्ऱोर्य मऱ ली जा सकती है।

11. दीर्घांत समारोह मध िजन ्र िय को मानद िडली ेदान क\$ जाती है, उनक\$ ेत्तुत कुलपित या उनके नामांककत ्रि िनद्वारा ठकया जाएगा।

12. दीर्घांत समारोह मध अ यथय को अपनी संबंधित िडली के िलए उपयु गाउन और शूड पहनना होगा, जो कायन्कारी आदेश िनद्वारा िनद्वारा ठकए जाएँगे। जो अ यथ िव विवालय िनद्वारा िनधाकरणत उचित अकादिमक पोशाक मध नहल है, दीर्घांत समारोह मध भत नहल कराया जाएगा।

13. दीर्घांत समारोह मध िडली ेदान करने के िलए, अ यथय को औपचाहरक ्र से कुलाधिपित या उनक\$ अनुपिंथित मध कुलपित के समी उनके संबंधित िडली के िलए ेत्तुत ठकया जाएगा।

संबंधित ातकोर विभाग के अय कला िनृणात और विान िनृणात अ यथय को ेत्तुत करणगे।

पदक और पुरंकार ेत्ताकता का नाम कुलसिचव या कुलपित िनद्वारा नामांककत ्रि िनद्वारा पढ़े जाएँगे।

कुलसिचव या इस ेयोजन के िलए िनयु ि अये मध िडली लेने वाले अ यथय को पेश करणगे।

दीर्घांत समारोह सम होने के बाद कुलपित िनद्वारा िनधाकरणत तरीके से अ यथय को िडली ेमाणपू ेदान ठकए जाएँगे।

14. कुलाधिपित, मुय अतिथ, कुलपित, कुलसिचव, विरु अधिकारी, परीा िनयंक, विवापीठ के संकायाय, विभाग के अय और वि विवालय के ेधिकाहरय के सदंय वि विवालय िनद्वारा िनधाकरणत विशेष वध पहनणगे और दीर्घांत समारोह के संचालन के िलए आगे क\$ ेद्वारा कायन्कारी आदेश िनद्वारा िनधाकरणत क\$ जाएगी।

15. भारत के कोई भी कं मं्री, राउय मं्री, कं शासित ेदेश के मं्री, लोकसभा/राउय विधान मंडल/संघ राउय विधान मंडल के अय, जब भी दीर्घांत समारोह मध शामिल होते ह., उउहउ उनक\$ ेर्ति के अनुसार विशेष वध ेदान ठकए जाते ह., जैसा ठक कुलपित िनद्वारा िगत मामल मध और

विं पहरषदः ॥२॥ारा और कायः पहरषदः ॥२॥ारा ४८.

28/05/2011 को संप चतुर्थ बैठक मः अनुमोदित।

વિવં વિવંાલય ંારા અૃય વિવં

विवालय/ाधिकरण/संथान के साथ मायता और सहयोग

कऽणाली

[अधिनियम क० धारा 6 (1) (vii), (x) एवं 28 (1) (के)]

ॐ तावना

1. केन्द्रीय विवेक विवेकालय अधिनियम, (2009) क 6 (1) (vii), विवेक विवेकालय को इस तरह के उद्योग के लिए उचित संस्थान को मायता देने का अधिकार देती है, जो एक विवेक विवेकालय निधाकरण कर सकता है और ऐसे मायता को वापस भी ले सकता है।
2. केन्द्रीय विवेक विवेकालय अधिनियम, (2009) क 6 (1) (x) विवेक विवेकालय को "विदेशी मंडलित संस्थान सहित किसी भी विवेक विवेकालय या संस्थाधिकरण या उचित संस्थान के साथ सहकारिता या सहयोग करने के अधिकार देती है" ऐसी मंडलित मंडल और ऐसे संयोजन को विवेक विवेकालय निधाकरण कर सकता है।
3. अधिनियम क 6 (1) (के) मंडल "अय विवेक विवेकालय, संस्था और अय संयुक्त निकाय और संगठन सहित अय एजेंसियों के साथ सहयोग और सहयोग क संस्था" के लिए आयादेश निधाकरण के संवधान कर गए ह।
4. उपरोक्त के संदर्भ मंडल, तिमलनाडु केन्द्रीय विवेक विवेकालय उचित संस्थान के अय संस्थान के साथ मायता और सहयोग करने का संताव रख सकता है, जिनमंडल क विभिन्न शाखा मंडल विशेष

मता है, जो एक विविध विद्यालय को अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए लाभदायक मता
निर्देश और अनुसंधान को संपूर्ण और सुदृढ़ बनाने का विशेष मता रखते हैं।

Hkkx III[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % v[k/kj.k

17

इसलिए यह अन्याय है।

I. मायता के लिए योयता

1. ऐसी संस्थाएँ जिन्होंने शिर्षा और शोध मता उन्मृता और शैर्षक योयता को िसक कया है और
कम-से-कम दस वर्षका कयकांिनवांकाह
मता के ढैक हरकांडका को िसक कया है, विविध विद्यालय के साथ सहयोग करने के लिए पाहगे।

बशतक एक ऐसी संस्थाएं देश के भीतर या दुनिया के अय देश म कहल भी िंथत हो सकती ह।

बशतक एक ऐसे िनकाय सरकार या अय एजंिसय िनकाय पोषित हो सकते ह., िसवाय इसके
क वे मुनाफा बनाने वाले िनकाय नहल हगे और विव
पोषण का ढोत कानूनी और सरकारी अनुमोदत मायम के मायम से होगा।

2. साबित क शई उन्मृता और अकादिक योयता, अय बात के अलावा, िनिलिखत बात के आधार
पर घोषित क जाएगी :

i. संथान मता पूणकाकिलक योय कोर संकाय हगे, िजसमता कम-से-कम चार
पूणकाकिलक शिर्षक हगे और जिहता
अयूनतम 5 वर्ष क अविध
तक यूजीसी/एआईसीटीई का वेतनमान ढा है और उहने कम-से-कम 5 शोध प और/या अपनी
पीएचडी के बाद आईएसएसएन/आईएसबीएन नंबर वाले कम-से-कम दो कताबत रकीय/अंतररकीय
कितान क प्रका/काशन घर मता ककशित कए हो।

ii. संथान के पास अनुसंधान के उद्देश्य के लिए आवंयक कयोगशाला सुविधा और पुंतकालय
के साथ अपनी वं वयं क इमारत होगी और
पुंतकालय मता पयाका संया मता अनुसंधान प्रकाएँ, संदभका पुंतकता, उत पा- पुंतक के साथ-

साथ इंटरनेट क सुविधा या देश के उ शैर्षक संथान/विविध विद्यालय मता उपयोग क जाने
वाली ऐसी आधुनिक उपकरण/सुविधाएं शामिल हगी।

iii. संथान मता अनुसंधान गितिविधय को िनिध देने के लिए पयाका विवकीय संसाधन हगे।

II. मा३यता और पहचान के नवीनीकरण के िलए ०४६८या

1.ऐसी कोई भी सं॑था जो िव॑ वि॒व॑ालय से संब॑ होने क॑ इ॒च्छा रखती है, िव॑ वि॒व॑ालय को

नि॒धा॒क॒रत ०४६८प म॑

पैरा 2 (I) म॑ नि॒द॒०४६८माण

०४६८प सहायक द॑तावे॒ज॑ के साथ ऐसा करने के म॑त॒

को िलिखत म॑ ०४६८तुत कर॑।

2.ऐसे सभी अनुरोध कुलसिचव

॥२॥०४६८ ०४६८ कए जाँगे और िव॑ वि॒व॑ालय के संकाया॒य॑ और ०४६८ोफेसर॑ क॑ सिमित

के सम॑ रखे जाँगे जो ०४६८ िन॑ानुसार बनी होगी और आम तौर पर एक साल म॑ दो बार िमलेगी :

०४६८ित कुलपित अथवा

कुलपित के ना॒मित सद॑य

—अ॒य॑

वि॒व॑ापीठ॑ के सभी संकाया॒य॑

—सद॑य

संब॑धित वि॒भाग॑/क॑थ॑ के अ॒य॑ एवं ०४६८ोफेसर,

जिनके नि॒द॒०४६८ म॑ ०४६८ता॒वित सहयोग होना है

—सद॑य

कुलसिचव

—सद॑य सिचव

सद॑य॑ के 50% से कोरम बनेगा।

सभी िन॒ण॒य वत॑मान सद॑य॑ के कम से कम 75% क॑ आम सहमित से िलए जाँगे।

3.उपरो॑ सिमित उन िनवेदन॑ पर विचार करेगी और कुलपित के पास इस मामले म॑ मा३यता के िलए

अनुशंसा करेगी,

जिसके आधार पर सं॑थान के

॥२॥०४६८ दावा ०४६८ गए तःय॑ का भौ॒तिक िनरी॑ण और स॒यापन करने के िलए तीन

सद॑यीय

सिमित को नामा॑ंकत ०४६८या जाएगा।

4.सिमित िव॑ वि॒व॑ालय क॑ िनिध के आधार पर सं॑था का दौरा करेगी और ऊपर पैरा 2 (I-IV) के

पैरामीटर क॑ त॒ज॒क॑

पर मा३यता के िलए उस

मामले का आकलन करने के िलए सं॑था का भौ॒तिक स॒यापन करेगी। ऐसा करने के बाद, वह

सिमित को अपनी हरपोटफ़न संपेगी, जो उस मामले के संबंध मः कुलपित को उचित अनुशंसा करेगी, जो अपनी राय के साथ, इस मामले पर निणफ़नय के लिए वैधानिक ंकाधिकाहरय के समीं ंतुत करणगे।

5. मायता सामाय ढप से पांच वषफ़न से अधिक नहल होगी और बशतः ढक उसकः मय-अविध मः समींा होगी, जिसकः विविध और समय विं विवॉलय ःनःारा तय ढकया जाएगा।

6. मायता को पाँच साल के बाद अगले ंयेक पाँच साल लिए बढ़ाया जा सकता है।

(क) बशतः ढक मायता अविध कः समां के कारण निदःश और अनुसंधान कायफ़नम कः निरंतरता मः बाधा नहल होगी।

(ख) बशतः ढक मायता ंा अविध के अंतिम छह महीन के दौरान विं विवॉलय के ःनःारा सामाय ढप से ढकसी अनुदेशांमक सेमेंटर के अनुसंधान करने या नवीनतः आरंभ करने के लिए कोई नया पंजीकरण नहल ढकया जाएगा।

7. मायता के पुनः मायता/नवीकरण के लिए निवेदन अविध कः समां कः तिथि से कम-से-कम 6 महीने पहले ंा होना चाहिए और जैसा ढक ऊपर उल्लेख ढकया गया है, उसी ंदया के अनुसार जाँच कः जाएगी।

8. विं विवॉलय ढकसी तंकाल ंभाव से ऐसी मायता को वापस लेने का अधिकार आरिंत करेगा, यढद कालांतर मः तःय मः ढकसी भी तरह का मिःयाकरण पाया जाता है या कोई भी तःय ंकाश मः आता है, जो ढक शैिणिक ंयायक के मामले मः संथा कः विवसनीयता या आचरण के लिए हांनिकारक है।

9. सभी कानूनी विवाद तिवाःर ऩयायालय के ंेाधिकार के अधीन हगे।

III. सहयोग / सहकाहरता कःणाली और अय विवरण का यौरा

1. विं विवॉलय या तो अनुदेशांमक या शोध के ंयोजन या दोन के लिए ढकसी संथा के साथ सहयोग करने का चयन कर सकता है।

2. बशतः उपरो मः से ढकसी एक के मामले मः, विंाथय को मौजूदा नियम और ढदशा-निदःश के अनुसार विं विवॉलय ःनःारा भत और जाँच कराई जाएगी।

3. विवेक विवेकालय द्वारा शुद्ध कथित भाषण और एकित कड जाएगी, जो ठक पारंपरिक समझौते के बाद संस्था द्वारा समान रूप से साझा कड जा सकती है।

4. माग११ दश११ क/शोध िनद११ शक११ को िव११ विव११ ालय ः११ ारा समय-समय पर संशो११ धित िनयम११ और िविनयम११ के अनुसार िनय११/मा११ यता ११ दान क११ जाएगी।

5.यह संस्थान का कोई शिर्षक अनुसंधान या शिर्षक कऽ अविध के मध्य-अविध मऽ सेवानिवृत्त हो जाता है, तो उसकऽ सेवा का सामाज्य रूप से सेमेन्टर के अंत तक उपयोग ढकया जाएगा, जिसके बाद विवेक विवेकालय द्वारा उपयोग प्रतिस्थापन ढकया जाएगा।

6. संस्थान मध्य विवेचित/शोधार्थ के बैच के निवास के समय का निष्पत्ति संबंधित विभागाध्यक्ष द्वारा लिया जाएगा।

हालांकि निवास कऽ अधिकतम अविध निानुसार नियंित कऽ जाएगी :

5 वर्षों के लिए एक अनुसंधान एवं पीएच.डी. कार्यक्रम के लिए 3 वर्षों के लिए पराजित कार्यक्रम के लिए

3 गैर-मागत सेमेस्टर

2 गैर-आगत सेमेस्टर

2 गैर- Δ मागत सेमेन्टर

एम.8फल कायस्थान के लिए 1 सेमेटर

जो कोई विषय विशेष रूप से ऊपर निर्दिष्ट हुआ हो, वह विवेक विभाग के मौजूदा नियम और समय-समय पर संशोधित के अनुसार नियंत्रित होगा।

 ${}^1\text{Hk}kx \text{ III} \mu [k.M \ 4^0$

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

बैठक मऽ अनुमोददत]

विवांथय के बीच अनुशासन का निवाह

(अधिनयम कऽ धारा 28(1)(o) के अंतर्गत)

1. अनुशासन मऽ विव विवालय के विवांथय द्वारा अच्छे आचरण और विंथत वहार का पालन करना शामिल है।
2. विव विवालय द्वारा नििलिखत और समय-समय पर तैयार ढकए गए ऐसे अडय नियम का पालन विव विवालय के विवांथय द्वारा ढकया जाएगा।
 - (क) विव विवालय का हर विवांथ अनुशासन बनाए रखेगा और उसे सभी जगह पर ठीक से वहार करने के लिए अपना कतऽ समझेगा/गी। पुष विवांथ, विशेष ढप से, मिहला विवांथय के ँतित उचित शिाचार और सन ढदखाएगा।
 - (ख) कोई भी विवांथ कुलानुशासक द्वारा "आउट ऑफ बाउडस" घोषित थान या े मऽ नहए जा सकता है। (ग) ँयेक विवांथ हमेशा कुलानुशासक द्वारा जारी ढकया पहचान प अपने साथ रखेगा।
 - (घ) ँयेक विवांथ, जिसे पहचान प जारी ढकया गया है, जब कभी आवंयकता हो, विव विवालय के कुलानुशासक के कमचारी, शैिक और ळंथालयकम तथा अडय अधिकाइय द्वारा माँगे जाने पर ढदखाना या देना होगा।
 - (ङ) ँतिपण या गलत नाम देने मऽ दोषी पाया गया विवांथ अनुशासनामक कारवाई के लिए उइरदायी होगा। (च) पहचान प कऽ हांन, जब भी ऐसा होता है, तंकाल कुलानुशासक को िलिखत ढप मऽ सूचित ढकया जाएगा।
 - (छ) यड कोई छू लगातार िबना ढकसी सूचना के एक या अधिक कंा मऽ 15 ढदन कऽ अविध के लिए अनुपिंथत पाया जाता है, उसका नाम रोल से हटा ढदया जाएगा। हालांढक, अगले पखवाड़े मऽ निधाइरत

पुनःवेश शुल्क के भुगतान पर संकायायित्व द्वारा पुनः भर्त करवाया जा सकता है। उसे निम्नलिखित अवधि के बाद पुनः भर्त करवाया जा सकेगा।

3. अनुशासन के उल्लंघन, अंतराल मंथ शामिल होगा :

- i. उपस्थित मंथ अनियमितता या संपे गए काम मंथ विरुद्धता या लापरवाही या उदासीनता।
- ii. कॉला या कायाभ्यालय या ग्रंथालय, स्टेडिंग गृह और लड़ा मैदान इत्यादि मंथ गड़बड़ी करना ;
- iii. शिक्षक या अधिकाधिक के निदेश का उल्लंघन करना ;
- iv. छात्र संगठन के चुनाव के समय या विवि विद्यालय कक्ष पाठ्यक्रम या अतिरिक्त पाठ्यक्रम वाली गतिविधियों के दौरान या बैठक के दौरान किसी भी प्रकार का दुपयोग या दुर्व्यवहार।
- v. परीक्षा केंद्र मंथ किसी भी प्रकार का दुपयोग या दुर्व्यवहार।
- vi. किसी शिक्षक या विवि विद्यालय के किसी भी कमर्चाारी या विवि विद्यालय के किसी भी आगंतुक के प्रति किसी भी प्रकार का दुपयोग या दुर्व्यवहार।
- vii. विवि विद्यालय कक्ष संपिष्ट/उपकरण को चोरी, खराब या विध्वंसित करना ;
- viii. दूसरे को उपरोक्त मंथ से कोई कार्य करना के लिए उकसाना ;
- ix. छात्रों के बीच नकारात्मक बात या अफवाह का प्रचार करना ;
- x. छात्रावास के निवासियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार, शरारत और/या उपद्रव ;
- xi. कुलानुशासक द्वारा छात्रों के लिए घोषित सीमा स्थान या क्षेत्र मंथ जाना ;
- xii. कुलानुशासक द्वारा जारी पहचान पत्र को साथ नहले ले जाना ;
- xiii. विवि विद्यालय के कुलानुशासक और अन्य कमर्चाधिकारियों द्वारा जब आवश्यक हो पहचान पत्र छेड़ने या समझौता करने से इनकार करना ;
- xiv. रैगिंग के कोई भी कार्य

xv. कहल पर भी ढकसी भी तरह का अडय आचरण, िजसे ढकसी भी छाू के िलए अशोभनीय माना जाता है। 4. अनुशासन का उडलंघन मः दोषी पाए गए छाू इस तरह के दंड के िलए िजमेदार हूँगे, जैसा ढक नीचे िनधाःकरत है ; (1)

जुमाःना

(2) पडरसर मः ःतबंढ

(3) िनवाःसन, और

(4) िनकासन

हालांढक, ढकसी अनुशासनाथः छाू को ऐसी कोई सजा नहल दी जाएगी, जब तक ढक उसे अपना बचाव करने का उचित मौका नहल ढदया जाता है। यह कुलपित को उसके िखलाफ अनुशासनामक कायःवाही कः लंबित अविध के दौरान एक शरारती छाू को िनलंबित करने से रोक नहल सकता।

5. छाू के संबंध मः अनुशासन और अनुशासनामक कारःवाई से संबंधित सभी शिःयाँ, कुलपित मः िनिहत हूँगी। हालांढक, कुलपित अपने सभी या उनकः ढकसी भी शिः का ःतिनिधव, िव विवलय कः कायःणाली कः जो भी ःडया है, के अनुसार कुलानुशासक या अनुशासिनक ःाधिकारी जो भी उचित माना जाएगा, को दःगे।

6. िनिलिखत सदंय कः एक अनुशासन सिमित होगी -

(क) कुलपित - अयूँ

(ख) ःति कुलपित

(ग) संकायायूँ - विवथः कः याण

(घ) कुलानुशासक

(ड) विवपीठ के संकायायूँ

(च) वाडःन, जब उसके छाूावास/रसोई से संबंधित मामले को सिमित के समूँ ःंतुत करने कः आवंयकता होगी,

उसे आमंित ढकया जाएगा, तथा

(छ)कुलसिचव (सदंय सिचव)

I. बशतः षक अधिनयम और पहरिनयम द्वारा कुलपित को यह शिर्का हो, सिमित को विवे विवेालय के विवेालय के अनुशासन और उचित वहार के मानदंड से संबंधित सभी मामल का संीान लेना होगा और उन पर दोषी

“ विवे को दंडित करने का अधिकार होगा। II. उस सिमित को ऐसे िनयम बनाना होगा, जो षक अपने काय के िनृपादन के िलए उपयु ह. और इन िनयम और

उनके तहत षकसी अय आदेश को विवे विवेालय के सभी छां पर बायकारी षकया जाएगा।

III. अनुशासन सिमित का िनण्णाय अंतिम और बायकारी होगा। हालां षक, असाधारण पहरिंथितय मः अनुशासन सिमित को अपने फैसले कः समींा करने का अधिकार है।

IV.

उ सिमित कः बैठक के िलए कुल सदंय का एक-ितहाई सदंय कोरम का गठन करेगा।

डॉ. एस. भुवनें वरी, कुलसिचव

[विीापन-III/4/असा./491/16]

1Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

21

(Established by an Act of Parliament, 2009)

NOTIFICATION

Thiruvavur, the 29th March, 2017

No. CUTN-10(1)/2012-Legal.—The following is published for general information :—

FIRST ORDINANCES

ADMINISTRATION ORDINANCE	
Ordinance No.	Title
3	General Provident Fund & Pension
ACADEMIC & EXAMINATIONS ORDINANCES	
1	Department of Studies and their current assignments
2	Admission of Students to the University
3	Fees payable by the Students of the University
4	B.Sc., B.S., B.A., M.A., M.Sc. Degree Programmes and P.G. Diploma Programmes
5	M.Phil. Degree Programme
6	Ph.D. Programme

7	Convocation
8	Manner of Recognition & Collaboration by the University with other Universities/Authority/Institutions
9	Maintenance of Discipline among Students

ADMINISTRATION ORDINANCE**ORDINANCE: 3**

[Approved by the Executive Council in its fourth meeting on 28/5/2011]

GENERAL PROVIDENT FUND & PENSION

[Under 28(o) of the Act]

All teaching and Non-Teaching employees of the University who have joined Central Government/ University service after 1st January 2004 shall be governed by the New Pension Rules as per provision of Notification No. 5/7/2003-ECB & PR dated 05/07/2003 issued by the Ministry of Finance (GOI) read with the provisions of Notification No. F. No.1 (7) (2) / 2003 / TA / 11, dated 07/01/2004 and OM No. 1 (7) (2) / 2003 / TA / 67-74 dated 04/02/2004 and as per subsequent amendments made from time to time.

ACADEMIC AND EXAMINATIONS ORDINANCES**ORDINANCE: 1**

[Approved by the Academic Council in its Second Meeting held on 3/4/2010 and by the Executive Council in its Second Meeting held on 8/5/2010]

DEPARTMENT OF STUDIES AND THEIR CURRENT ASSIGNMENT

[Under Section 26(k) read with Statute 15(5) (a) of the Central University Act, 2009]

- 1. The School of Social Sciences and Humanities shall consist of the following Departments now**

assigned to it:

- (i) Department of Tamil.
- (ii) Department of English.
- (iii) Department of Regional Studies.

- 2. The School of Basic and Applied Sciences shall consist of the following Departments now assigned to it:**

- (i) Department of Physics.
- (ii) Department of Chemistry.

- 3. The School of Mathematics and Computer Sciences shall consist of the following Departments**

now assigned to it:

- (i) Department of Mathematics.

ORDINANCE: 2

[Approved by the Academic Council in its Second Meeting held on 3/4/2010 and by the Executive Council in its Second Meeting held on 8/5/2010]

ADMISSION OF STUDENTS TO THE UNIVERSITY

[Under Sections 6(1)(xviii), 6(2)(i) & (ii), 7 and 28(1)(a) of the Act]

1. No candidate shall be eligible for admission to any Programme of study in the University unless he/she has passed the examination prescribed by the University, as condition of eligibility for admission to the concerned programme.
2. Application form for admission to the various programmes offered by University shall be as

prescribed by Academic Council / or any other body, from time to time. In respect of collaborating Institutes with which the University has a formal MOU or those institutes which have been recognized in accordance with the provisions of the Act, the application form will be suitably modified.

3. The last date of admission to the various programmes of the University shall be as fixed each year by the Academic Council.
4. The number of candidates to be admitted in the various programmes of the University shall be as prescribed each year by the Academic Council
5. Admissions to the Graduate, Post Graduate, M.Phil, Diploma, PG Diploma Programmes shall be made by the Admission Committee as constituted by the respective School or Department/Centre. The Admission Committee shall consist of the Dean/Head of the Department/ Director of Centre and two senior most members of the staff of the concerned department. However, when necessary the VC may constitute a suitable admission Committee. Its composition and functions shall be as decided by Vice Chancellor.
6. Admission to the programme leading to the Doctor of Philosophy shall be considered by the School Board of the School concerned. In respect of admission to such programme through the mentoring
¹Hkkx IIIµ[k.M 4° Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k
Institutions, the School Board will also consider the recommendations of the guides, who will examine the specific statement of purpose articulated by the candidate, for acceptance.
7. In the case of collaborating Institutes, in addition to the admission Committee of the Institutes, a nominee of the Vice Chancellor will be a member of the admission Committee.
8. Such candidates who satisfy the requirement of eligibility may be considered for admission on the basis of the academic record, and / or performance of the candidate at any entrance test/viva voce as may be prescribed in respect of each programme. Candidates shall be admitted to the various programmes in order of merit. No candidate shall claim admission as a matter of right.
9. Only such candidates, who have passed an examination of an Indian University incorporated by any law for the time being in force, or such other examination as has been recognized equivalent, shall be eligible for admission. The equivalence of foreign degrees /courses will be determined by the University in consultation with the Department in which the student is seeking admission.
10. In the respect of admission to supernumerary seats reserved by the Government of India for candidates from backward states and foreign countries, their admission will be governed by the guidelines of the Government of India. However the total number of such supernumerary seats shall not exceed 5% of the total intake of the University in that year of admission.
11. Notwithstanding anything contained in the provisions relating to admission, including admission to the programmes in which the University has an MOU with collaborating Institutes, the University may make special provisions for the admission of women, persons with disabilities or persons belonging to the weaker sections of the society and in particular, of the Scheduled Caste and Scheduled Tribe, and other socially and educationally backward classes of citizen. Such special provisions shall be as prescribed by regulations from time to time.
12. No candidate shall ordinarily be admitted to more than one programme at a time. However, Students may be permitted by the University, in consultation with the concerned Dean of the School/Director of the Centre, to pursue a part-time/evening Certificate / Diploma programme of

professional nature in other Institutions. Pursuing such studies should not interfere with the academic activities of the student in the University. Permissions can be withdrawn by the University if it is found to interfere in the academic activities of the students in the University.

13. All candidates at the time of admission shall submit a medical fitness certificate from an Authorized Medical Practitioner/Asst. Civil Surgeon.

14. A candidate shall be enrolled in a programme in a School on his admission as a student of the University and after paying the prescribed fee. For self-supporting and self-financing programmes, the fees will be determined by the University after detailed working of the economics of the running of the programmes.

15. If at any time it is found that a candidate has made a false or incorrect statement or has made use of other fraudulent means on the basis of which he has secured his admission, his name shall be removed from the rolls of the University forthwith.

ORDINANCE: 3

[Approved by the Academic Council in its Second Meeting held on 3/4/2010 and by the Executive Council in its Second Meeting held on 8/5/2010]

FEES PAYABLE BY THE STUDENTS OF THE UNIVERSITY

[Under Section 28(1)(e) of the Act]

1. The Executive Council on the recommendations of the Academic Council shall, from time to time prescribe the fees payable by students of the University for various purposes.

2. All the Students admitted to various programmes of studies shall pay the fees as prescribed at the time of admission and for the subsequent semesters within the date notified by the University.

3. Delay or default in payment:

(1) If a student does not pay fee on time, fine shall be levied as follows:

- (i) 10% of the fees for the first 10 days from the last day for payment.
- (ii) 20% of the fees for the next 10 days
- (iii) 30% of the fees for the next 10 days.

(2) The Vice-Chancellor, or, on his behalf any other officer to whom his power has been delegated may on the recommendations of the Dean of the School concerned, condone the delay or reduce the fine to be paid by the student in special cases provided the student concerned submits a written application stating the reasons for late payment of fee. Such applications should be submitted at least one week before the due dates.

(3) Names of the defaulters shall be removed from the rolls of the University on expiry of 30 days from the notified last date for payment of fee.

(4) A student whose name has been struck off from the rolls of the University may be re-admitted on the recommendations of the Dean of the School concerned and on payment of arrears of fees and fines in full and other dues, together with a re-admission fee as fixed by the University. However, such re-admission shall be within the same semester and subject to the student fulfilling the minimum attendance requirement.

(5) Whenever a student proposes to withdraw from the University, he shall submit an application to the Dean of the School concerned through the Head of the Department / Centre intimating the date of his / her withdrawal. If he fails to do so, his name shall continue to be kept on the rolls of the University for a maximum period of one month following the month up to which he has paid the fees. He shall also be required to pay all fees/charges that may fall due during this period.

4. Exemption to Blind students:

Blind students shall be exempted from payment of all fees.

5. Concession in fee:

- (1) Concession in fees, Grant of free ship and percentage of free ship will be governed by the regulations of University Grants Commission as amended from time to time.
- (2) Free ships granted during the academic year shall not be renewed automatically in the following year. The Students in need of such concession shall submit fresh applications every year, which shall be considered along with new applications received in the year.
- (3) A free ship granted to a student may be cancelled if his conduct or progress in studies is found to be unsatisfactory.
- (4) Fees concession for SC/ST or to any other category of students shall be as per Govt. of India directives.

6. Refund of fees, security deposit etc:

- (1) If, after having paid the fees, a student desire to discontinue, he shall submit an application for withdrawal. If such application is received by the Registrar at least five days before the commencement of the academic session concerned he shall be refunded all fees and deposits except registration fee.
- (2) If after having paid the fees, a candidate does not join the University and if his application for withdrawal is received by the University after the commencement of the academic session but before the closure of admission, he shall be refunded all fees and deposits deducting 25% of the tuition fee in addition to registration fee.
- (3) Application for withdrawal received after the closure of admission for the academic session would entitle a student for the refund of Security Deposit / Caution Money only.
- (4) Security deposit or caution money are refundable, on an application from the student on his / her leaving the University, after deducting all dues, fines and other claims against him.
- (5) If any student does not claim the refundable portion of any amount lying to his / her credit within one calendar year of his leaving the University, it shall be considered to have been forfeited by him to the Students' Aid Fund. The period of one year shall be reckoned from the date of announcement of the result of the examination last taken by the student or the date from which his name is struck off from the rolls of the University.
- (6) If a student owes any money to the University on account of any damage he may have caused to the University property, it shall be deducted along with outstanding Tuition Fee and fines, from the Security Deposit due to him.

¹Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

25

7. The fees and Hall ticket for Examinations

- (1) The examination fee payable by the students shall be fixed by the University.
- (2) A student shall not be issued Hall Ticket or admitted to the Examinations unless he has cleared his dues and paid the examination fee.

8. Fees for re-checking Examination results:

- (1) The fees for re-checking examination results shall be as fixed by the University.
- (2) The fees for rechecking shall be refunded to the candidate if, on re- checking the result, any error or omission is discovered in the result notified by the University.

9. Fees for the supply of Statement of Marks:

- (1) Every student shall pay along with the examination fee, a fee as fixed by the University for Supply of statement of marks for each examination.
- (2) The statement of marks shall be sent to the candidates through the Head of the Department / Centre concerned.

10. Fees

The fees for admission, readmission, registration, examination, rechecking, mark sheet, transfer certificate, provisional certificate, Degree certificate, bonafide certificate or any other certificate and duplicate copies of certificates will be as per the Schedule issued by the University from time to time.

ORDINANCE: 4

[Approved by the Academic Council in its Second Meeting held on 3/4/2010 and by the Executive Council in its Second Meeting held on 8/5/2010]

B.Sc., B.S., B.A, M.A., M.Sc. Degree Programmes and P.G. Diploma Programmes

[Under Section 28(1) of the Act]

1. All the courses of study leading to award of respective degrees / diplomas shall be conducted by the School / Departments / Centers established by and functioning in the university or in the collaborating Institute with which the university has entered into an MOU.

2. Duration of the course

- (1) Admission to the Integrated Programmes leading to Masters in Arts, Science, Technology, Performing Arts and other disciplines shall be made and the duration of such courses shall be five years in semester pattern. The university may provide exit option to students on their request after successful completion of 3rd and 4th years and award graduate degree as determined by the University.
- (2) The duration of all graduate degree programmes shall be as prescribed from time to time in semester pattern.
- (3) The duration of all post graduate programmes, shall be two years or as prescribed from time to time in semester pattern. This is applicable for those admitted directly into PG degree programmes of the university with respective qualifying Bachelor's degree from recognized universities and Institutes of Higher Education.
- (4) The duration of Certificate/Diploma/PG diploma programmes shall be as prescribed by the University from time to time in semester pattern. This is applicable for those who are admitted directly to Certificate/Diploma/PG Diploma programme of the university with qualification as determined by the University from recognized universities and Institutes of Higher Education for each of the Certificate/Diploma/PG Diploma programme.

3. Eligibility for admission

The eligibility criteria for admission to various courses offered by the University in each year shall be as approved by the Academic Council or any other body authorized for the purpose from time to time.

4. Courses of study and framing of the syllabi:

- (1) The Courses in a Programme shall be those approved by the respective Board of School, on the recommendations of the Department/Centre or by collaborating Institute(s);
- (2) The content of each course shall be those approved by the respective Board of School/ Collaborating Institute(s)/Departments/Centres;
- (3) Reading and learning material for each course shall be as prescribed by the School/ Department/ Centre/collaborating Institute(s) concerned.

5. Attendance

- (1) The minimum required attendance is 75% of the classes actually held and other prescribed learning activities such as seminars, session and practical section each course.
- (2) The University may for valid and convincing reasons condone the shortage in attendance not exceeding 5 per cent, provided that the Dean of the School concerned/Collaborating Institute(s) makes a recommendation to this effect after consulting the Head of the Department/Director of the Centre.

- (3) The students deputed by the University to take part in the extra co-curricular events shall be given a concession of up to 5% attendance, if necessary, in addition to the relaxations in the attendance requirement as provided above. Such concession would be available for the days of actual participation in the event, including journey time with the prior approval of the University

6.Evaluation

Regulation on Teaching and evaluation shall be as notified separately

7.Removal of Students from the Programme:

The Vice Chancellor may approve removal of a student from the Programme on receipt of a recommendation of the Dean of a school/Heads of the Department/Director of Centre/Head of collaborating Institute, on a reference from a Department or Centre concerned of unsatisfactory performance of the student.

ORDINANCE: 5

[Approved by the Academic Council in its Second Meeting held on 3/4/2010 and by the Executive Council in its Second Meeting held on 8/5/2010]

M.Phil. DEGREE PROGRAMME

[Under Section 28(1) of the Act]

- 1.The School/Department/Centre/Collaborating Institutes concerned shall prescribe the content of each course and shall specify the methodology and instructional devices to be adopted for M.Phil Programmes.
- 2.The duration of the M.Phil course shall be one year spread over two semesters.

¹Hkkx IIIμ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

27

- 3.**Eligibility for Admission:** The eligibility criteria for admission to various M.Phil courses offered by the University in each year shall be as approved by the Academic Council/or any other body authorized for the purpose from time to time.

4. Procedure of Admission:

- (1) All applications for admission to M.Phil Programme shall be considered by the Admission Committee of the School/Department/Centre, and the committee shall recommend (i) whether the candidate should be admitted only to the M.Phil Programme, or (ii) whether the candidate should be admitted to the M.Phil Programme and also provisionally enrolled for Ph.D degree as provided in the Ordinances relating to the Ph.D. Programme.
- (2) If a candidate is found fit for admission to the M.Phil Programme, his admission shall be made to that Programme on the recommendation of the Admission Committee by Dean/Head of the Department/Director of Centre. However, if a candidate is found fit for provisional admission for Ph.D course by the admission committee, his admission shall be made subject to confirmation by the Board of the School concerned.

5.Attendance:

- (1) The minimum required attendance is 75% of the classes actually held and other prescribed learning activities such as seminars, sessionals and practicals etc. in each course.
- (2) The University may for valid and convincing reasons condone the shortage in attendance not exceeding 5 per cent, provided that the Dean of the School concerned/Collaborating Institute(s) makes a recommendation to this effect after consulting the Head of the Department/Director of the Centre.
- (3) The students deputed by the University to take part in the extra co-curricular events shall be given a concession of up to 5% attendance, if necessary, in addition to the relaxations in the attendance requirement as provided above. Such concession would be available for the days of actual participation in the event, including journey time with the prior approval of the University

6.Appointment of Advisers for the M.Phil Course

There shall be an adviser for every student of the M.Phil course who shall be appointed by the School/Department/Centre concerned.

7.Topic of Dissertation

The topic of dissertation, monograph or research paper to be offered by a student shall be approved by the School/Department/Centre on a proposal submitted by the candidate through the Adviser concerned.

8.Evaluation

Regulation on Teaching and evaluation are notified separately.

9.Removal of students from the Programme:

The Vice Chancellor may approve removal of a student from the Programme on receipt of a recommendation of the Dean of a school/Heads of the Department/Director of Centre/Head of collaborating Institute, on a reference from a Department or Centre concerned of unsatisfactory performance of the Student.

ORDINANCE: 6

[Approved by the Academic Council in its Fifth Meeting held on 3/2/2012 and by the Executive Council in its Sixth Meeting held on 9/6/2012]

Ph.D. PROGRAMME

[Under section 28(1) of the Central Universities Act]

ARTICLES:

- 1.Preamble
- 2.Language of Instruction and writing Theses
- 3.Eligibility for registration in the Ph.D. Programmes
- 4.Procedure for registration in the Ph.D. Programmes
- 5.Supervisors
- 6.Course Work and submission of Progress Reports
- 7.Procedure for Evaluation/Examination of Course Work

1.PREAMBLE:

- 1.1. Ph.D. programmes shall be conducted for awarding the Degrees of Doctor of Philosophy (Ph.D.) in any Discipline of Humanities/Sciences/Social Sciences/Education etc. in which provisions for postgraduate studies and/or research programmes are available in the University.
- 1.2. The Degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) shall be awarded to a student on the basis of an original research work incorporated in a thesis, recommended by a board of examiners and successfully defended in a viva-voce examination.
- 1.3. The thesis shall demonstrate that the student is capable of doing scholarly work. The results of research embodied in the thesis shall be a contribution to the existing knowledge either by a discovery of new facts or theories or discovery of some new relations between facts already known or critical survey of facts leading to some new interpretations or development of new techniques.

2.LANGUAGE OF INSTRUCTION AND WRITING THESES:

English shall ordinarily be the medium of instruction as well as the language for writing the theses in Ph.D. programmes except in the following cases:

- In the language departments, the medium of instruction as well as the language for writing a thesis shall be the concerned language of the department. Such permission shall be granted by the Research Board on the recommendation of the concerned Department Research Committee.

3.ELIGIBILITY FOR REGISTRATION IN THE Ph.D. PROGRAMMES :

3.1. An applicant for registration in a Ph.D. Programme must have obtained a Master's Degree (two years duration) with a minimum of 55% marks in the concerned or an allied subject, preceded by a Bachelor's Degree or an equivalent Degree of three years duration from a recognized University / Institute. Due relaxation shall be given to the applicants belonging to the reserved categories as per the rules of the Government of India.

3.2. In addition to the above, an applicant must also fulfill any one of the following conditions:

- i) Qualified in any of the following examinations: NET (conducted by UGC/CSIR), SLET, GATE, or equivalent National Level Examinations conducted by ICAR/ICMR/ etc.
- ii) Holder of UGC Teacher Fellowship.
- iii) Obtained an M. Phil. degree of CUTN or any other university recognized by the UGC that also follows the UGC (Minimum Standards and Procedure for awards of M.Phil./Ph.D. Degree), Regulation 2009.
- iv) Cleared the CUTNRET (The validity of the CUTNRET, once cleared, will be for two years from the date of publication of result)

3.3. The CUTNRET will normally be held in the months of February and August every year, but the University reserves the right of holding it another time in the year, depending on the requirements of its Research Programme. Type and structure of the CUTNRET will be determined by the University, in consultation with the academic Departments/Centres. Eligibility for appearing in the CUTNRET shall be as per the article No. 3.1 above.

4. PROCEDURE FOR REGISTRATION IN THE Ph.D. PROGRAMMES

4.1. Students shall be admitted to the Ph.D. programmes from the applicants who fulfill the eligibility criteria as per the article No. 3, twice in an academic year (normally before September 15 and March 15) following the procedures, described hereinafter.

¹Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

29

4.2. Admission Committees of all Schools conducting Ph.D. programmes in one or more of the academic departments/centres under them, shall lay down and decide on annual basis a predetermined and manageable number of seats for Ph.D. programmes depending on the number of available eligible faculty supervisors as specified under article No.5.1. Such approved number of seats for the Ph.D. programmes shall be notified in the University Website.

4.3. Admission Committees of Schools offering the Ph.D. programmes shall prepare the draft of notification for registration in the Ph.D. programmes, including the registration through qualifying in the CUTNRET and get it approved by the Academic/Examination Division of the University each year, before sending it for publication in the University Website.

4.4. Applicants for registration in the Ph.D. programmes shall apply in the prescribed form paying requisite fees, to the Head of the Department/Dean in accordance with the notifications in that regard. The applications shall be accompanied by attested copies of necessary documents/ testimonials and a brief statement on the area of their respective research interests. The applicants must submit separate application forms for separate programmes. Any subsequent prayer for change of programme shall not be entertained, irrespective of the merit position of the concerned applicant in CUTNRET.

4.5. After the last date of receiving the applications to appear in the CUTNRET, the Admission Committees of the concerned Departments shall screen the applications and display department wise lists of applicants eligible for appearing in the CUTNRET in the respective Departments as well as in the University website.

4.6. The University shall conduct the CUTNRET and prepare the list of the qualifying applicants department wise. The applicants qualified in the CUTNRET and the candidates who are exempted from CUTNRET as per article 3.2 shall be called for interview before the Department Research Committee of the concerned Department/Centre who will prepare the final merit list in respect of that Department/Centre on behalf of the Admission Committee of the concerned

Department on the basis of the performance of the applicants in the interview. All the applicants called for interview must submit a write-up (about 1000 words) on his/her research interest with a broad title and at the time of interview, they are expected to discuss on their respective areas of research interests. After completion of the interview, the final merit lists of the selected and wait-listed applicants shall be prepared separately, department wise considering article 4.2. The final merit lists shall be displayed by the respective Departments and notified in the University website. Registration from the waiting lists shall be allowed up to 4 weeks from the beginning of the semester if vacancies arise due to drop out/other reasons. There will be a fresh merit list, every semester.

- 4.7. Only the predetermined number of applicants in accordance with the approved intake capacity shall be offered registration in the Ph.D. programmes as per the final merit list, who will be registered after payment of requisite registration fees. Immediately thereafter, the Department Research Committee shall recommend the names of supervisors to the Research Board for approval, through the concerned Head of the Department, based on the research interests of the Ph.D. students and relevant expertise of the supervisors. The number of supervisors for a Ph.D. student shall not exceed two in any time. The selected applicants shall be required to pay the requisite fees for Registration and Course Work as may be determined by the University from time to time. The date of payment of fees for registration in a Ph.D. programme shall be considered as the date of registration. The tenure of registration of a student of the Ph.D. programme shall be for a period of three years from the date of his/her registration. A Ph.D. student who is unable to complete his/her thesis within three years may apply for re-registration at least three months before the completion of the tenure of his original registration without any change in the title. The application has to be recommended by the concerned Department Research Committee for consideration and approval of the Research Board.

The student shall pay their required fees for re-registration and the re-registration shall be valid for a further period of one year from the date of expiry of the original registration. If and when a student submits his/her Ph.D. thesis, he/she shall cease to be a student of the programme, once the results for the same are declared. The Department Research Committee, if need be, on the formal request of the Supervisor and co-Supervisor, if any, of a Ph.D. candidate may consider the cancellation of the

Ph.D. Registration in the relevant cases, and recommend the case to Research Board for final approval. In cases involving disciplinary action, the Chairman, Department Research Committee, may move the proposal for cancellation of registration.

5. SUPERVISORS:

- 5.1 A student, after his registration in a Ph.D. programme, shall be assigned to work under the guidance of a supervisor. Allocation of the Supervisor shall be decided by the concerned Department Research Committee, in a formal manner considering the following:

- a) The number of Ph.D. student under the eligible Supervisor(s),
- b) Research interest of the concerned Ph.D. student, and
- c) The available specialization and expertise of the eligible Supervisor(s).

The Department Research Committee shall ensure that a Supervisor shall not have more than eight Ph.D. students, at any given point of time, including those under his/her co-Supervisorship (defined here in after in 5.4.1, 5.4.2 & 5.4.3) but excluding the students who have already submitted their theses/dissertations. In exceptional cases, the Department Research Committee will take appropriate decisions. The allocation of supervisor shall not be left to the individual student or teacher.

- 5.2 The Department Research Committee shall also ensure that no Ph.D. student shall remain without a Supervisor for more than six months due to any reason whatsoever. During the period of absence of a Supervisor, the concerned Head of the Department/Centre shall act as the Supervisor, except in the case where there is a co-Supervisor within the University. If there is a co-Supervisor within the

of university, the co-Supervisor shall act as the Supervisor for all practical purposes until the return of the Supervisor. Such a temporary arrangement shall be in force till a formal replacement is made by the Department Research Committee and this temporary arrangement shall not be considered for counting the number of Ph.D. students under a Supervisor/co-Supervisor for the purpose of ensuring compliance of the maximum permissible number of Supervisorships as mentioned in the article 5.1 above.

5.3 The Head of a Department/Centre shall have the administrative control over the Ph.D. students of that Department/Centre. However, this administrative control shall normally be exercised through the concerned Supervisors.

5.4 Eligibility of the Supervisors and Co-Supervisors :

5.4.1. All Professors, Associate Professors and those Assistant Professors who possess Ph.D. degree and confirmed in their post, shall be eligible to act as Supervisor of Ph.D. students. Teachers from the collaborating institutions/Universities fulfilling the eligibility requirements can also become guides/co-guides/supervisors.

5.4.2. Apart from the designated Supervisor for each Ph.D. student as described above, the concerned Department Research Committee, may consider the appointment of another Professor or Associate Professor or Assistant Professor of the University possessing Ph.D. Degree as a co-Supervisor for a Ph.D. student provided he/she is otherwise eligible as a Ph.D. Supervisor as per the article nos. 5.1 and 5.4.1. The Department Research Committee shall consider the appointment of a co-Supervisor only to improve the quality of Research and if the area of research of the concerned Ph.D. student is found to be common in nature with the specialization and expertise of the proposed co-Supervisor. For the purpose of counting the number of Ph.D. students under an eligible Supervisor, all such Co-Supervisorships shall also be counted. A supervisor, at any given point of time, shall not have more than eight Ph.D scholars and Five M.Phil. Scholars.

5.4.3. UGC Research Scientists, persons of equivalent category, persons of national/international eminence engaged in research in a University or in a reputed National/International institute continuously for at least five years (at the time of application by the concerned applicants for registration in Ph.D. programmes) or Foreign/International scholars of global eminence in the relevant area of research may also be designated as co-Supervisors (with their consent) if the concerned Research Boards are of the opinion that such appointments

¹Hkkx IIIμ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

31

shall improve the quality of the research. Such a co-Supervisorship shall ipso facto cease to be effective when the co-Supervisor leaves the University or Institute where he/she was employed at the time of his/her appointment as co-supervisor.

5.4.5. Any near relation of a Ph.D. student cannot act as a Supervisor or co-Supervisor.

5.4.6. Professor, Associate Professor or Assistant Professor, who have registered himself/herself for the Ph.D. degree of the University or any other university shall not be eligible as a Supervisor or co-Supervisor during the tenure of his or her own Ph.D. studentship.

5.4.7. If a Supervisor retires from the university service before the submission of thesis by his/her students but continues to reside within the adjacent area of the university, he/she may continue to act as supervisor up to a maximum period of two years, from the date of retirement.

5.4.8. Supervisor and co-Supervisor may act as Examiner in the Ph.D. examination process.

6.COURSE WORK AND SUBMISSION OF PROGRESS REPORTS

6.1.1.All Ph.D. course-work will be on full-time basis.

- 6.1.2. All Ph.D. students except the students who have passed M.Phil. Degree from a recognized university by following the UGC (Minimum Standards and Procedure for awards of M.Phil/Ph.D. Degree), Regulation, 2009 shall be required to undertake course work for a period of one semester. However, a Ph.D. student, who has earlier obtained an M. Phil. degree in the same field of study by following the UGC (Minimum Standards and Procedure for awards of M.Phil/Ph.D. Degree), Regulation, 2009 may be exempted from course work and shall have to submit a synopsis of the proposed research work including the title of the research topic before the concerned Department Research Committee, which shall process the same in accordance with the provisions of the article 6.2 below.
- 6.1.3. Details of the course work shall be as per the article 7 below. The course work to be undertaken by a Ph.D. student shall normally be conducted by the concerned department in which he/she has been registered. However, the course work may also be undertaken in another department within the University, if so approved by the Research Board on a specific recommendation by the Department Research Committee of the department in which the student has been registered, with concurrence of the Department Research Committee of the other department. For the purpose of according such an approval, the proposed area of research of the Ph.D. student shall have to be similar or overlapping or common in nature with the contents of the course work conducted by the other department.
- 6.2. Just after completion of the course work, a Ph.D. student shall submit an elaborate research proposal for his/her research work including the title of the research topic, methodology and new contribution envisaged in the proposal towards the discovery of knowledge before the concerned Department Research Committee. The concerned Department Research Committee shall forward its recommendation for the consideration of the Research Board whose decision shall be final in these regards. The title of the thesis shall be written in English and in any other language as approved by the concerned Department Research Committee and the Research Board.
- The concerned Department Research Committee, shall forward its recommendation including that for any modification of the title of the Research topic, if needed, for consideration of the Research Board.
- 6.3. After successful completion of the course work in the semester, a Ph.D. student is required to submit annual progress reports, after completion of each academic year, before the concerned Boards of Study, which shall be duly endorsed by his/her Supervisor. The Research Boards shall assess the progress reports at the earliest and forward only those reports which have been deemed as unsatisfactory, to the Department Research Committee with appropriate advices to the concerned Supervisors.
- 6.4. Ph.D candidates shall publish one research paper in a refereed journal before the submission of thesis/monograph for adjudication and produce evidence for the same in the form of acceptance letter or reprint.
- 6.5. Prior to submission of thesis, the student shall make a pre-MPhil/Ph.D presentation in the Department, that may be open to all Faculty Members and Research Students, for getting feedback and comments, which may be suitably incorporated into the draft thesis as per the advice of the Supervisor.

7. PROCEDURE FOR EVALUATION/ EXAMINATION OF COURSE WORK

7.1. The Structure of Course Work:

- (a) There shall be three types of credit courses, 'only theory courses', 'only practical courses' and 'composite courses'. The composite courses will have both theory and practical components.
- (b) The distribution of marks in various courses of Ph.D. programme shall be:
- i. For 'Only theory courses'
- Semester Terminal Examination : 80
Internal Assessment : 20
Total : 100

ii. For 'Only practical courses'

Semester Terminal Practical Examination : 80

Internal Assessment : 20

iii. For 'Composite courses' i.e. Theory & Practical (70:30)

Semester Terminal Theory Examination : 50

Semester Terminal Practical Examination : 50

Internal Assessment : 20

Total : 100

Total : 100

(c) Internal Assessment

Internal assessment will be done in the form of continuous evaluation having at least two tests of different forms (tutorial, class test as objective, essay, viva-voce, quiz type, assignment/term paper, class seminar, group discussion etc.) per course. The tests should be spread throughout the Semester but 15 days before the commencement of semester of terminal examination. At least 50% weight should be on written form of tests. In case of the student who fails to appear in the semester terminal examination but appears in Internal Assessment (continuous evaluation) of the courses, marks of internal assessment of the student will remain valid during his/her next chances but if a student remains absent or scores low or nil marks even in internal assessment, he/she will not be permitted to reappear for internal assessment after the semester is over.

7.2. THE COURSES:

Duration of Course : As per the article 6.12

Course No. 1 :

Research Methodology and techniques - 4 credits/100

marks Course No. 2 :

Elective course (to be chosen/opted from - 4 credits/100 marks

¹Hkkx IIIμ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

33

Several courses in the broad area of the field of study in which research towards thesis is to be done)

Course No. 3 - 4 credits/ 100 marks

Reviewing of published research work in the relevant field of research and written presentation of a synopsis on the proposed area of research Qualifying marks in each of the above courses - 50%

7.2.1 The distribution of credit or marks for courses in the Ph.D. programme shall be as follows : Course No.	Credit Points	Marks
1	4	100
2	4	100
3	4	100

ORDINANCE NO. 7

[Approved by the Academic Council in its Fifth Meeting held on 3/2/2012 and by the Executive Council in its Sixth Meeting held on 9/6/2012]

CONVOCATION

(Under Statute 29)

1. a. A Convocation for the purpose of conferring degrees shall ordinarily be held once in a year on such date and place as may be fixed by the Vice-Chancellor with prior approval of the Chancellor.

- b. The Academic calendar of the University shall, in addition to the schedules for academic activities like courses and Examinations, also include the date/s for degree awards;
- c. If necessary, the University may schedule Degree awards more often than once in a year and the same shall be included in its academic calendar;
- d. The Degree award date/s shall be normally within 180 days of the date/s by which the students are expected to qualify and become eligible for them; however, the University can change the award date without any such stipulation.

2. A special convocation for the purpose of conferring Honorary degrees may also be held at such time as may be decided by the Executive Council.

3. The Collegium shall consist of members of the Court, Executive Council, Academic Council, Deans of Schools and Heads of Departments.

The Chancellor shall, if present, preside at the Convocations of the University for conferring degrees. In the absence of the Chancellor, the Vice-Chancellor shall preside at the Convocation.

4. Not less than four weeks' notice shall be given by Registrar of all meetings of the Convocation.

5. The Registrar shall, with the notice, issue to each member of the Convocation, a programme of the procedure to be observed thereat.

6. The Candidates who have passed their examinations in the year for which the Convocation is held shall be eligible to be admitted to the Convocation.

Provided that this will not be applicable to the First Convocation at which candidates of all the preceding years shall also be admitted to their respective degrees.

Provided also that incase the Convocation could not be held in a particular year, the Vice-Chancellor shall be competent to admit candidates to the respective degrees without waiting for formal Convocation but on payment of prescribed fees.

Such recipients of degree shall, however, sign the usual exhortation which they are required to do while Convocation ceremony is normally held.

Provided also that in case the Convocation is not held in a particular year, the Vice-Chancellor shall be competent to authorize admission of all those eligible candidates who so wish to obtain their degrees through a Convocation to the next Convocation and confer on them the respective degrees on payment of the prescribed fees.

Provided further that those who wish to obtain their degree in absentia when Convocation is held regularly, may also do so after payment of usual fees.

8. a. A candidate for the degree must submit to the Registrar his/her application on or before the date prescribed for the purpose, for admission to the degree at the Convocation in person, along with the prescribed fees.

b. The University shall notify a programme for Degree awards at least 30 days before the date/s so fixed, so that the candidate can apply for same:

9. Candidates unable to present themselves in person at a Convocation, shall be admitted to the degree in absentia by the Chancellor or in his/her absence by the Vice-Chancellor and their Diplomas shall be given by the Registrar on application and payment of the prescribed fees.

10. The fees for admission to the degree at the Convocation in person shall be as prescribed from time to time.

11. Honorary degree shall be conferred only at Convocation and may be taken in person or in absentia.

12. The presentation of the persons at the Convocation on whom honorary degrees are to be conferred shall be made by the Vice-Chancellor or his nominee.

13. Candidates at the Convocation shall wear gowns and hoods appropriate to their respective degrees as may be specified by executive orders. No candidate shall be admitted to the Convocation who is not in proper academic dress as prescribed by the University.

14. For the award of degrees at the Convocation, candidates present shall be formally presented to the Chancellor or in his/her absence to the Vice-Chancellor for admission to their respective degrees as follows:

The Heads of respective post-graduate Departments will present the Master of Arts and Master of Science Candidates.

The name of the recipients of medals and prizes shall be read by the Registrar or the person nominated by the Vice-Chancellor.

The Registrar or the person appointed for the purpose will present the candidates for conferment of degrees in absentia.

Degree certificates shall be supplied to the candidates in a manner prescribed by the Vice-Chancellor after the Convocation is over.

15. The Chancellor, The Chief Guest, the Vice-Chancellor, the Registrar, the Finance Officer, the Controller of Examinations, the Deans of Schools, the Heads of the Departments and the members of the University authorities shall wear their special robes prescribed by the University and further procedure for the conduct of the Convocation shall be prescribed by the executive orders.

16. Any Minister of the Indian Union, Minister of State Governments, Minister of the Union Territories, Speaker of LOK SABHA/State Legislatures/Union Territory Legislatures, whenever they attend the Convocation, they be provided special robes according to their status, as may be decided by the Vice-Chancellor in individual cases and like other authorities/officers of the University, they may attend the Convocation with their academic robes on.

1Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

35

ORDINANCE NO. 8

[Approved by the Academic Council and by the Executive Council in its Fourth Meeting held on 28/5/2011]

MANNER OF RECOGNITION & COLLABORATION BY THE UNIVERSITY WITH OTHER UNIVERSITIES/AUTHORITY/INSTITUTIONS

[Under Section 6 (1) (vii), (x) and 28 (1) (k) of the Act]

PREAMBLE

1. Section 6 (1) (vii) of the Central Universities Act (2009) empowers the University to recognize an institution of higher learning for such purposes that the University may determine and to withdraw such recognition.
2. Section 6 (1) (x) of the Central Universities Act (2009) empowers the University “to co-operate or collaborate or associate with any University or authority or institution of higher learning, including those located outside the country in such manner and for such purposes as the University may determine.
3. Section 28 (1) (k) of the Act make provision for framing of Ordinance to provide for “the manner of co-operation and collaboration with other Universities, institutions and other agencies including learned bodies and associations”
4. In the context of the above, the Central University of Tamil Nadu proposes to recognize and collaborate with other institutions of higher learning that have core competence in various branches of knowledge to enrich and strengthen instruction and research in such areas as are beneficial to the University in furtherance of its Objectives.

Hence the Ordinance.

I. ELIGIBILITY FOR RECOGNITION

1. Such institutions that have a proven excellence and academic competence in instruction and research and are at least ten years old with a proven track record of competence will be eligible for the purpose of recognition to collaborate with the University.

Provided that such institutions may be located anywhere within the country or in others countries of the world.

Provided further those that such bodies may be funded by the Government or other agencies except that they shall not be profit-making bodies and the source of funding shall be through legal and government approved means.

2. Proven excellence and academic competence shall be adjudged, among other things, on the following basis:

- i. The institution shall have full-time qualified core faculty consisting of at least four full time teachers and who should have drawn the UGC/AICTE pay scales for a minimum period of 5 years and must have published at least 5 papers and/or at least two books after his/her Ph.D. in journals/publication houses of national/international repute having ISSN/ISBN number.
- ii. The institution shall have their own building with required laboratory facility and Library for research purpose and the library shall have adequate number of research journals, reference books, advanced textbooks along with internet facility or such modern equipment /facilities used in higher educational institutes/Universities in the country.
- iii. The institution shall have sufficient financial resources to fund research activities.

II. PROCEDURE FOR RECOGNITION AND RENEWAL OF RECOGNITION

1. Any such institution that desires to be associated with the University shall express its intention to do so in writing to the University in the prescribed format with supporting documents in proof of para 2 (I)

2. All such requests shall be received by the Registrar and placed before a Committee of Deans and Professors of the University which shall be composed of the following and shall normally meet twice in a year:

Pro Vice-Chancellor or Nominee of the Vice Chancellor Chairman	—
All Deans of Schools	—Members
Head and all Professors of Department/Centre concerned in Whose area of instruction the proposed collaboration Is to be carried out Members	—
Registrar Secretary	—Member-
50% of the members shall constitute a quorum.	

All decisions shall be taken by consensus of at least 75% of the members present.

3. The above Committee shall consider the requests received and recommend a case for recognition to the Vice-Chancellor who shall nominate a three-member committee to carry out physical inspection and verification of the facts claimed by the institute.

4. The committee shall visit the institution by drawing upon the funds of the University and shall carry out physical verification of the institution to assess its case for recognition on the lines of the parameters at para 2 (I-iv) above. After doing so, it shall submit its report to the Committee

who then make appropriate recommendation to the Vice-Chancellor who, along with his/her opinion, place it before the statutory authorities for decision in the matter.

5. Recognition granted shall normally not exceed five years and will be subject to a mid-term review the manner and timing of which shall be as decided by the University.

6. Recognition may be extended after five years for subsequent terms of five years each.

a. Provided that the continuing instruction and research schedule shall not be disturbed for the reason of expiry of the term of recognition alone.

b. Provided further that normally no new registration for research or initiation of an instructional semester shall be initiated by the University during the last six months of the period of recognition.

7. Request for re-recognition/renewal of recognition shall be received at least six months in advance from the date of expiry of the period and shall be examined as per the procedure already detailed above.

8. The University shall reserve the right to withdraw such recognition with immediate effect if any falsification of facts is found at a later stage or any fact comes to light that is damaging to the credibility or conduct of the institution in terms of academic credentials.

9. All legal disputes shall be subject to the jurisdiction of the courts at Thiruvavur.

III. MANNER OF COLLABORATION/COOPERATION AND OTHER DETAILS

1. The University may choose to collaborate with an institution for the purposes of either instruction or research or both.

2. Provided that in case of either of the above, the students shall be admitted and examined by the University as per extant rules and guidelines.

3. Fees shall be prescribed and collected by the University which may be equally shared by the institution after mutual agreement.

4. Guides/research supervisors shall be appointed/recognized by the University as per its rules and regulations as amended from time to time.

¹Hkkx IIIμ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vIk/kj.k

37

5. If a teacher of the institution retires in mid-term of the period of research or instruction, his/her services shall normally be utilized till the end of the semester following which suitable replacement shall be made by the University.

6. The timing of residence of a batch of students/research scholar(s) at the institution shall be decided by the Head of the Department concerned.

However the maximum period of residence shall be regulated as follows:

For 5 years integrated and Ph.D. course For 3 years UG course

3 non-consecutive semesters 2 non-consecutive semesters

For PG courses

2 non-consecutive semesters

M.Phil. courses

1 semester

Any matter not specifically covered in the above shall be regulated as per the University Rules as existing and amended from time to time.

ORDINANCE NO. 9

*[Approved by the Academic Council and by the Executive Council
in its Fourth Meeting held on 28/5/2011]*

MAINTENANCE OF DISCIPLINE AMONG STUDENTS

[Under Section 28(1) (o) of the Act]

1. Discipline includes the observance of good conduct and orderly behavior by the students of the University.
2. The following and such other rules as framed by the University from time to time shall be strictly observed by the students of the University.
 - a. Every student of the University shall maintain discipline and consider it his /her duty to behave decently at all places. Men student shall, in particular, show due courtesy and regard to women students.
 - b. No student shall visit places or areas declared by the Proctor as “Out of Bounds” for the students.
 - c. Every student shall always carry on his/her person the Identity Card issued by the Proctor.
 - d. Every student, who has been issued the Identity Card, shall have to produce or surrender the Identity Card, as and when required by the Proctorial Staff, Teaching and Library Staff and the Officials of the University.
 - e. Any Student found guilty of impersonation or of giving a false name shall be liable to disciplinary action.
 - f. The loss of the Identity Card, whenever it occurs, shall immediately be reported in writing to the Proctor.
 - g. A student is found to be continuously absent from classes without information for a period of 15 days in one or more classes, his/her name shall be struck off the rolls. He/she may, however, be readmitted within the next fortnight by the Dean on payment of the prescribed readmission fee etc. He /She will not be readmitted beyond the prescribed period.
3. Breach of discipline, interlaid, shall include:
 - i. Irregularity in attendance, persistent idleness or negligence or indifference towards the work assigned.
 - ii. Causing disturbance to a Class or the Office or the Library, the auditorium and the play Ground etc.;
 - iii. Disobeying the instructions of teachers or the authorities;
 - iv. Misconduct or misbehavior of any nature at the time of elections to the student bodies or at meeting or during curricular or extra-curricular activities of the University.
 - v. Misconduct or misbehavior of any nature at the Examination Centre.
 - vi. Misconduct or misbehavior of any nature towards a teacher or any employee of the University or any visitor to the University.
 - vii. Causing damage, spoiling or disfiguring to the property/equipment of the University;
 - viii. Inciting others to do any of the aforesaid acts;
 - ix. Giving publicity to misleading accounts or rumor amongst the students;
 - x. Mischief, misbehavior and/or nuisance committed by the residents of the hostels;
 - xi. Visiting places or areas declared by the proctor as out of bounds for the students.
 - xii. Not carrying the identity cards issued by the Proctor;
 - xiii. Refusing to produce or surrender the Identity Card as and when required by Proctorial and other Staff of the University;
 - xiv. Any act from of ragging.
 - xv. Any other conduct anywhere which is considered to be unbecoming of a student.
4. Students found guilty of breach of discipline shall be liable to such punishment, as prescribed below;

- (1) Fine
- (2) Campus Ban
- (3) Expulsion, and
- (4) Rustication

However, no such punishment shall be imposed on an erring student unless he is given a fair chance to defend himself. This shall not preclude the Vice-Chancellor from suspending an erring student during the pendency of disciplinary proceedings against him.

5. All powers relating to discipline & disciplinary action in relation to the student shall vest in the Vice-

Chancellor. However the Vice-Chancellor may delegate all or any of his/her powers as he deems proper to the Proctor or to the disciplinary authority as the case may be any functionary of the University.

6. There shall be a Discipline Committee comprising of the following members

- a. Vice-Chancellor – Chairman
- b. Pro-Vice-Chancellor
- c. The Dean Students Welfare
- d. The Proctor
- e. The Deans of the Schools;
- f. The Warden, who shall be invited, when the matter concerning his/her/her Hostel/Kitchen is required to be placed before the Committee for consideration; and
- g. The Registrar (Member/Secretary)

I. Subject to any powers conferred by the Act and the Statutes on the Vice-Chancellor, the Committee

shall take cognizance of all matters relating to discipline and proper standards of behavior of the students of the University and shall have the powers to punish the guilty as it deems appropriate.

¹Hkkx IIIµ[k.M 4°

Hkkjr dk jkti=k % vlk/kj.k

39

II. The said Committee shall, make such Rules as it deems fit for the performance of its functions and these Rules and any other orders under them shall be binding on all the students of the University. III. The decision of the Discipline Committee shall be final and binding. However, in exceptional circumstances the Discipline Committee is empowered to review its decisions.

IV. One-third of the total members shall constitute the quorum for a meeting of the said Committee.

Dr. S. BHUVANESWARI,
Registrar
[ADVT.-
III/4/Ext./491/16]

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.

ALOK Digitally signed

by

ALOK KUMAR
2017.03.30

KUMAR Date:
10:21:31 +05'30'